प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५५
मूल्य
एक रुपया

मुद्रक
सुरेन्द्र प्रिंटर्स लि०,
दिल्ली

प्रकाशकीय

'मण्डल' से अबतक टाल्स्टाय की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनमें से कुछ को तो असाधारण लोकप्रियता प्राप्त हुई है। वस्तुतः उनकी सभी रचनाएँ नैतिक धरातल की हैं और यही कारण है कि पाठकों के लिए वे बड़े लाभ की हैं। विचार सुलझे तथा शैली सजीव होने के कारण ये पुस्तकें बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक की 'टीचिंग्स ऑव क्राइस्ट' का रूपान्तर है। जैसा कि उन्होंने अपने निवेदन में कहा है, इस पुस्तक की रचना बालकों को इञ्जील के कुछ चुने हुए अंश समझाने के लिए की गई थी। बालकों को समझाने के लिए बड़ी ही सरल भाषा और रोचक शैली का प्रयोग करना होता है। पाठक अनुमान कर सकते हैं कि इस पुस्तक की भाषा और शैली कितनी सुपाठ्य और सुबोध होगी।

सारी पुस्तक नीति-वचनों से भरी पड़ी है। भाव इञ्जील के हैं, भाषा टाल्स्टाय की है। कहीं-कहीं इतनी सुन्दर छोटी-छोटी कहानियाँ आती हैं कि पाठक पढ़ कर कुछ समय के लिए विचार-मग्न हो जाता है।

पुस्तक एक बार पढ़ कर उठा कर रख देने की नहीं है। उसे बार-बार पढ़ना चाहिए। साथ ही उसके विचारों का मनन करने और तदनुसार आचरण की भी आवश्यकता है।

—मन्त्री

दो शब्द

दस बरस से लेकर तेरह बरस तक के ग्रामीण बालको की मैने एक जमात बनाई थी। मेरी इच्छा थी कि इन बालको को मैं ईसा की शिक्षाओं का इस ढंग से अध्ययन कराऊँ कि वे उन्हे आसानी से समझ सकें और उनके जीवन पर भी उनका असर पडे। इसलिए अपनी भाषा में मैंने उन्हे वे अश पढाये, जो मुझे बहुत ही सरल-सुबोध और बालको के लिए अत्यन्त उपयुक्त जान पड़े, साथ ही नैतिक मार्ग-दर्शन के लिए बड़े ही आवश्यक।

जितना अधिक मै इस दिशा मे प्रयत्न करता गया उतना ही बालकों के मेरे द्वारा बताई बातो के दोहराने के ढग तथा उनके प्रश्नो से स्पष्ट होता गया कि बालक किन चीजो को सब से अधिक आसानी से समझ सकते हैं और किन चीजो की ओर सब से अधिक आकर्षित होते हैं।

अपने इसी अनुभव के आधार पर मैंने इस पुस्तक की रचना की है। मुझे विश्वास है कि इसके पठन-पाठन तथा उसके द्वारा ईसा की शिक्षा में निहित शाश्वत सत्यो को जीवन में उतारने की जो भावना पैदा होती है उससे बालकों को लाभ ही होगा। ईसा के शब्दो में बालक ईश्वर के राज्य-सम्बन्धी शिक्षाओ को ग्रहण करने के लिए विशेष-रूप से समर्थ होते हैं।

—टाल्स्टॉय

विषय-सूची

ईसा की सिखावन

: १ :

कल्याण का मार्ग

ईसा ने अपने उपदेशो और अपने जीवन से मनुष्यों को यह दिखा दिया कि हर आदमी मे परमात्मा की शक्ति का वास है।

ईसा के उपदेशों के अनुसार, मनुष्यों मे सब बुराइयाँ इसलिए आती है, क्योकि वे सोचते है .कि उनके प्राण उनके शरीर में ही बसते है, परमात्मा की शक्ति मे नही । इसी कारण वे एक-दूसरे के साथ लड़ते है, इसी कारण उनकी आत्माओं को क्लेश होता है और इसी कारण वे मृत्यु से डरते है ।

परमात्मा की शक्ति प्रेम है । प्रेम ही परमात्मा है और हर आदमी की आत्मा मे प्रेम का वास है ।

जब लोग यह विश्वास करने लगेगे कि उनका जीवन परमात्मा की शक्ति मे अर्थात् प्रेम मे ही है, तब न वैमनस्य होगा, न मानसिक उत्पीड़न और न मृत्यु से भय ।

हरकोई अपना कल्याण चाहता है । ईसा के उपदेशों से मनुष्यों ने यह जाना कि प्रेम ही से कल्याण होता है और सभी को यह कल्याण सुलभ हो सकता है । इसीलिए ईसा की शिक्षा को धर्मोपदेशो का नाम दिया गया ।

: २ :

ईसा का उदय

१९०८ बरस हुए जब ईसा ने जॉसफ की पत्नी मेरी के गर्भ से जन्म लिया था ।

तीस बरस की आयु तक वह अपनी माँ, अपने पिता और भाइयों के साथ नाजरथ में रहे । जब उनके पिता बहुत बूढ़े हो गए तो वह बढ़ई का काम करके अपने पिता की सहायता करने लगे ।

जब वह ३० बरस के हुए तो उन्होंने सुना कि लोग एक महात्मा के उपदेशों को सुनने के लिए जंगल में जाया करते हैं । उनका नाम था जॉन । सो वह भी जॉन के उपदेशों को सुनने के लिए औरों के साथ-साथ वहाँ गये ।

जॉन कहते थे कि प्रभु के राज्य की वेला आ गई है । उस प्रभु-राज्य में हर-कोई यह जान लेगा कि सब मनुष्य समान है, कोई भी किसी से ऊँचा नही है और न कोई किसी से छोटा है । सब मनुष्यों को प्रेम-पूर्वक रहना चाहिए और अपने पड़ोसियों के साथ सद्-व्यवहार करना चाहिए । उनका कहना था कि ऐसा समय निकट है; लेकिन ऐसा तभी होगा, जब लोग बुरे काम करने छोड़ देंगे ।

जब सरल हृदय लोग उनसे पूछते, "मुझे क्या करना चाहिए ?" तो जॉन उनसे कहते कि जिस किसीके पास दो पोशाके हैं, उसे एक उस व्यक्ति को दे देनी चाहिए, जिसके पास एक भी नही है, और इसी प्रकार जिसके पास खाने को है, उसे उस व्यक्ति के साथ बाँट लेना चाहिए, जिसके पास बिलकुल नही है । अमीरों से जॉन कहते कि उन्हे लोगों को

लूटना नही चाहिए। सैनिकों से वह कहते कि दूसरों का माल मत छीनो। जो कुछ तुम्हे मिला है उसीमें संतोष करो और गाली-गलौज मत करो। फरीसियों, सडूसियों और वकीलों से वह कहते कि उन्हे अपने जीवन मे फेर-वदल और प्रायश्चित करना चाहिए। वह उनसे कहते, "मत सोचो कि तुम कोई खास किस्म के इसान हो। अपने जीवनों मे परिवर्तन करो और ऐसा परिवर्तन करो कि लोग तुम्हारे कामों से देखें कि तुममे परिवर्तन हो गया है। यदि तुम वदलोगे नही तो तुम्हारी वही गति होगी, जो उस पेड़ की होती है, जिसपर फल नही लगते। यदि एक पेड़ फल नही देता तो उसे ईधन के लिए काट दिया जाता है। अगर तुमने अच्छी करनी न की तो तुम्हारे साथ भी यही व्यवहार होगा। यदि तुम अपने जीवन मे परिवर्तन नही करोगे तो तुम नष्ट हो जाओगे।"

जॉन ने हर किसी को प्रेरणा दी कि वह दयालु वने, न्यायप्रिय और नम्र वने। जो लोग अपने जीवन मे परिवर्तन करने का वचन देते, उन्हे वह जीवन-परिवर्तन की निशानी के रूप मे जार्डन नदी मे स्नान कराते। जव स्नान करा चुकते तो कहते, "मैंने तुम्हें जल से पवित्र किया है, लेकिन तुम्हारी अन्तरात्मा मे जो प्रभु-शक्ति विद्यमान है, वही तुम्हे पूर्णतया पवित्र कर सकती है।"

जॉन के ये शब्द, कि लोगो को अपने जीवन मे परिवर्तन करना चाहिए, जिससे प्रभु का राज्य आ सके, और कि केवल परमात्मा की शक्ति से ही मनुष्य पवित्र हो सकते है, ईसा के दिल मे गहरे पैठ गए। जो कुछ उन्होने जॉन से सुना था उस सव पर विचार करने के लिए ईसा घर

लौटने की बजाय जंगल में ही रह गये। वहाँ वह कई दिन रहे। जॉन से उन्होंने जो कुछ सुना था, उसपर विचार करते रहे।

: ३ :

पवित्र जीवन

जॉन ने कहा था कि प्रभु-राज्य के उदय के लिए लोगों को प्रभु की शक्ति द्वारा पवित्र बनना होगा।

'प्रभु की शक्ति द्वारा पवित्र होने के अर्थ क्या है ?' ईसा ने सोचा। यदि परमात्मा की शक्ति से पवित्र होने का मतलब यह है कि किसी को भी केवल अपने ही लिए नहीं, प्रत्युत परमात्मा के आदेशानुसार जीना चाहिए, तो निश्चय ही प्रभु-राज्य का उदय हो सकता है। यदि सब मनुष्य उसी भावना के अनुसार रहने लगे तो वे सब एक हो जायंगे और वही प्रभु का राज्य होगा। लेकिन मनुष्यों को अपने शरीरों और साथ-ही-साथ अपनी आत्मा के लिए भी जीना होगा। अगर वह निजी शरीरों और केवल निजी शरीरों की सेवा करने के लिए ही जीते है और उसी को मुख्य कर्म बना लेते हैं तो वे सब जुदा-जुदा होकर रहने लगेंगे, जैसाकि वे इस समय करते है। उस दशा में प्रभु-राज्य का कभी उदय नही होगा। 'तो फिर क्या किया जाय ?' ईसा के मन में विचार उठा। केवल आत्मा के लिए जीना तो असंभव है और सांसारिक लोगो की तरह केवल तन के लिए जीना भी भूल है। अगर हम इसी तरह जियेंगे तो हम सब जुदा-जुदा रहेंगे और प्रभु-राज्य का कभी उदय नही होगा। तो फिर क्या किया जाय ? इससे भी

काम नही चलेगा कि एक मनुष्य अपने तन को खत्म कर डाले, क्योकि जीव परमात्मा की इच्छा से ही शरीर में वास करता है, इसलिए किसी का निज की हत्या करना परमात्मा की इच्छा के विपरीत जाना हुआ।

यह विचारकर, ईसा ने अपने-आपसे कहा, "तो इसका मतलब यह है कि हम केवल आत्मा के लिए नही जी सकते, क्योकि आत्मा तो शरीर मे वास करता है। और हमे केवल शरीर के लिए ही उसकी सेवा करते हुए नही जीना चाहिए, जैसाकि वहुधा लोग करते है। न हम अपने-आपको शरीर से स्वतंत्र कर सकते है, क्योकि आत्मा परमात्मा की इच्छा से शरीर मे वास करता है। तो फिर किया क्या जा सकता है ? केवल एक उपाय है, और वह यह कि हम परमात्मा की इच्छानुसार शरीर मे वास कर सकते है, लेकिन शरीर मे रहते हुए हमे उसकी नही, वल्कि परमात्मा की सेवा करनी होगी।"

इस निष्कर्ष पर पहुँचने के बाद, ईसा जगल से रवाना हो गये और अपने उपदेशो का प्रचार करने के लिए नगरों और ग्रामो मे गये।

: ४ :

अन्तः-खोज

कुछ ही समय मे ईसा की चर्चा चारो ओर फैल गई और वहुत से लोग उनके प्रवचनो को सुनने के लिए उनके पास आने लगे।

उन्होंने लोगो से ये शब्द कहे :

"आप लोग जॉन के प्रवचनों को सुनने के लिए जगल में

गये थे। आप क्यों गये थे? कोई सुदर-सुदर वस्त्र-धारी लोगों को देखने जाता है, लेकिन ऐसे लोग तो राजमहलों में रहते है। उस जंगल में तो ऐसा कुछ भी नही था। फिर आप जॉन के पास जंगल में क्यो गये? आप एक ऐसे आदमी की बाते सुनने गये, जिसने आपको सिखाया कि क्यो-कर अच्छा जीवन बिताया जा सकता है। उन्होने आपको क्या शिक्षा दी? उन्होंने आपको सिखाया कि फिर से प्रभु-राज्य का उदय होगा, लेकिन उसके उदय के लिए—और इसलिए कि इस संसार मे कोई बुराई न रहे—यह आवश्यक है कि मनुष्य जुदा-जुदा न रहे, हरकोई अपने-आपके लिए न जिये, वल्कि सब एक हो जाय, और सव एक-दूसरे के साथ प्रेम-पूर्वक रहे। इसका मतलब यह हुआ कि प्रभु-राज्य के उदय के लिए सबसे पहले आपको अपने जीवन मे परिवर्तन करना होगा। प्रभु-राज्य का आप-से-आप उदय नही होगा, परमात्मा स्वत. उस राज्य की स्थापना नही करेंगे। लेकिन उस प्रभु-राज्य की स्थापना तो आपको करनी होगी। यह आप कर सकते है, लेकिन तभी जब आप अपने जीवन के ढंग में परिवर्तन करने की चेष्टा करेंगे।

"यह न समझिए कि प्रत्यक्ष रूप मे प्रभु-राज्य प्रकट होगा। प्रभु-राज्य को आँखों से नही देखा जा सकता। अगर कोई आपको बतलाता है कि यह यहाँ अथवा वहाँ है, तो उस पर विश्वास न करो और न उसकी खोज करो। प्रभु-राज्य किसी समय-विशेष या स्थान-विशेष में नही है। वह सर्वत्र है और कही भी नही है, क्योकि वह स्वतः आपके अन्दर है, आपकी निजी आत्मा मे है।"

: ५ :

सत्य-आचरण

ईसा ने अधिकाधिक स्पष्टतापूर्वक अपने उपदेशों की व्याख्या की। एक बार जब उनके पास बहुत-से लोग आये तो उन्होने उन्हे बताया कि प्रभु-राज्य के उदय के लिए मनुष्यों को किस प्रकार जीवन बिताना चाहिए।

उन्होने कहा :

"प्रभु का राज्य सांसारिक राज्यों से सर्वथा भिन्न होता है। प्रभु के राज्य मे अहंकारी और अमीर प्रविष्ट नही होंगे। अहंकारी और अमीर इस समय शासन करते है, वे अपने-आपको सुखी रखते है, हरकोई उनकी प्रशंसा और उनकी इज्जत करता है, लेकिन जबतक वे अहंकारी और अमीर है और उनकी आत्माओं मे प्रभु-राज्य नहीं है, वे प्रभु-राज्य मे प्रविष्ट नही होंगे। प्रभु-राज्य में अहंकारी नही, बल्कि नम्र प्रविप्ट होगे, अमीर नही बल्कि गरीब प्रविष्ट होगे। लेकिन नम्र और ग़रीब भी उसमे तभी प्रवेश पा सकेंगे, जबतक कि वे नम्र और गरीब हैं, क्योकि ऐसे होने पर ही वे बड़े और अमीर बनने के लिए गुनाह नही करेंगे, केवल इसीलिए नही कि वे अमीर और बड़े बनने के लायक नहीं हैं। अगर आप केवल इसलिए गरीब है कि आप सपत्ति प्राप्त करने के अयोग्य है तो आप उस नमक के समान है, जिसका कोई स्वाद नही। वह नमक बिल्कुल बेकार है, जिसमे नमकीन स्वाद नही। अगर वह नमकीन नही है तो वह किसी भी काम का नही और उसे फेंक दिया जाता है।

"यही दशा आपकी है। अगर आप केवल इसलिए ग़रीब

है कि आपको यह पता नही था कि अमीर कैसे बना जाता है तो आप भी किसी लायक नही—न तो गरीब होने लायक और न अमीर होने लायक ।

"इसलिए दूसरी सब बातों से पहले यह आवश्यक है कि प्रभु-राज्य में प्रवेश पाया जाय। प्रभु-राज्य और उसकी सत्यता की खोज करो, आपकी सब आवश्यकताएँ पूरी हो जायँगी ।

"यह मत सोचो कि मैं आपको किसी नई बात की शिक्षा दे रहा हूँ। सब बुद्धिमान और सत पुरुषो ने जो सिखाया था, वही मै आपको सिखाता हूँ। मै तो आपको केवल यही बतलाता हूँ कि उन्होने जो शिक्षा दी थी, उसे आप कैसे पूरा कर सकते हैं। उसे पूरा करने के लिए आपको परमात्मा के आदेशों का पालन करना होगा—झूठे उपदेशकों की तरह केवल उनकी चर्चा करके नही, बल्कि उनपर अमल करके, क्योंकि केवल वही, जो परमात्मा के आदेशों पर अमल करता है और अपने आचरण से दूसरो को उनपर अमल करना सिखाता है, स्वर्ग के राज्य में प्रविष्ट होगा ।"

: ६ :

धर्मादेश

ईसा ने कहा :

"पहला आदेश यह है : पुराने 'धर्म-ग्रंथ' मे कहा गया था, "किसी की हत्या न करो" और "जो कोई हत्या करता है, वह गुनहगार है ।"

"लेकिन मै आपको बतलाता हूँ कि अगर एक आदमी अपने भाई पर गुस्सा करता है तो वह परमात्मा की दृष्टि में

गुनहगार है और उस हालत मे तो वह और भी ज्यादा गुनहगार है, जबकि वह अपने भाई को गालियाँ देकर कडुवी बातें कहता है । इसलिए अगर आप प्रार्थना करना शुरू करते है और आपको याद आता है कि आप अपने भाई के साथ गुस्सा है तो पहले जाकर उसके साथ सुलह कीजिए । या अगर आप किसी कारण वैसा नही कर सकते तो आपके दिल मे उसके प्रति जो गुस्सा है, उसे दूर कर दीजिए ।

"यह है पहला आदेश ।

"दूसरा आदेश यह है : पुराने 'धर्म-ग्रंथ' मे कहा गया था, "व्यभिचार मत करो, और अगर आप अपनी पत्नी से अलग होते है तो उसे तलाक दीजिए ।"

"लेकिन मै आपसे कहता हूँ कि न केवल मनुष्य को व्यभिचार नही करना चाहिए, बल्कि अगर वह किसी स्त्री को अपने मन मे बुरे विचार रखकर देखता है तो परमात्मा के समक्ष तो वह गुनहगार है ही । और तलाक के विषय मे मै आपको बतलाता हूँ कि जो आदमी अपनी पत्नी को तलाक देता है, वह खुद व्यभिचार करता है, और अपनी पत्नी से भी वैसा कराने का कारण बनता है, साथ ही उसे भी गुनहगार बनाता है, जो तलाक दी हुई स्त्री के साथ ब्याह करता है ।

"यह है दूसरा आदेश ।

"तीसरा आदेश यह है : पुराने 'धर्म-ग्रंथ' मे आपको बताया गया था, "कसम न खाओ, किन्तु परमात्मा के समक्ष अपनी प्रतिज्ञाओ पर स्थिर रहो ।"

"लेकिन मै कहता हूँ कि आपको हरगिज कसम नही खानी चाहिए, लेकिन अगर आपसे किसी बारे मे पूछा जाय तो

'हाँ' कहिए, बशर्तेकि वह 'हाँ' है, और 'न' कहिए, बशर्तेकि वह 'न' है। आपको किसी भी बात के लिए कसम नही खानी चाहिए। मनुष्य सर्वथा परमात्मा की शक्ति के अधीन है और वह पहले से उस कर्म के लिए वचन नही दे सकता, जिसके लिए उसकी प्रतिज्ञा उसे बाँधती है।

"यह है तीसरा आदेश।

"चौथा आदेश यह है: पुराने 'धर्म-ग्रंथ' में कहा गया था, "आँख के बदले आँख फोड़ दो और दाँत के बदले दाँत तोड़ दो।"

"लेकिन मैं कहता हूँ कि आपको बुराई के बदले बुराई नही करनी चाहिए और आँख के बदले आँख या दाँत के बदले दाँत नही तोड़ना चाहिए। अगर कोई आपके एक गाल पर चांटा मारे तो चांटे का जवाब चांटे से देने की बजाय यह बेहतर है कि उसके सामने दूसरा गाल कर दो। अगर कोई आपसे आपका कुरता छीनना चाहता है तो बेहतर है कि आप उसके दुश्मन बनने और अपने भाई के साथ लड़ने की बजाय उसे अपना कोट भी देदें। आपको बुराई का सामना बुराई से नही करना चाहिए।

"यह है चौथा आदेश।

"पाँचवाँ आदेश यह है: आपके पुराने 'धर्म-ग्रथ' में यह कहा गया था, "अपनी ही जाति के लोगों से प्रेम करो और दूसरी जातियों के लोगों से नफ़रत।"

"लेकिन मै आपसे कहता हूँ कि आपको हरकिसी के साथ प्रेम करना चाहिए। अगर मनुष्य अपने-आपको आपके शत्रु समझते हैं तब भी आपको उनसे प्रेम करना चाहिए

और उनके कल्याण की कामना करनी चाहिए। सारे मनुष्य एक ही पिता के पुत्र है, सब भाई-भाई हैं, और इसलिए आपको हर-एक के साथ समान-भाव से प्रेम करना चाहिए।

"यह है पाँचवाँ और आखिरी आदेश।"

: ७ :

पारस्परिक प्रेम

और ईसा ने उन सबको, जो उनकी बाते सुन रहे थे, आगे बताया कि यदि वे उसके आदेशो का पालन करेंगे तो क्या होगा।

उन्होने कहा, "यह न सोचिए कि अगर आप लोगो के साथ गुस्सा नही करते, सबके साथ शांतिपूर्वक रहते है, पत्नी-व्रत पालन करते है, कसम नही खाते, जो आपको हानि पहुँचाते है उनसे अपनी रक्षा नही करते, जो-कुछ आपसे पूछा जाता है, उसे सच्चे दिल से कह देते है, और अपने दुश्मनों से प्यार करते हैं और इस ढँग से जीवन चलाते है, तो आपकी ज़िदगी वर्तमान की अपेक्षा अधिक मुश्किल और बुरी हो जायगी। आपका जीवन वर्तमान की अपेक्षा बुरा नही होगा, बल्कि उससे बेहतर ही होगा। हमारे दैवी पिता ने हमे यह नियम इसलिए दिया है कि हम अपने जीवन को बुरा न बनावें, बल्कि इसलिए कि हमारा जीवन सच्चा जीवन हो।

"इस शिक्षा के अनुसार रहो, प्रभु-राज्य का उदय हो जायगा और आपकी सब आवश्यकताएँ पूरी हो जायंगी।

"परमात्मा ने पछियो और जगली जानवरों के लिए नियम बना दिये है और जब वे उन नियमों के अनुसार रहते है तो उनका सिलसिला ठीक चलता है। आपका भी सिलसिला

ठीक चलता रहेगा बशर्ते कि आप परमात्मा के नियम का पालन करें। मैंने जो-कुछ कहा है, वह अपनी ओर से नही कहा, बल्कि यह परमात्मा का नियम ही बताया है, जो सब मनुष्यो के दिलो में अंकित है। अगर इस नियम से मनुष्यों का कल्याण न होता तो परमात्मा ने उसे बनाया ही न होता।

"संक्षेप मे, वह नियम यह है कि हमे परमात्मा और अपने पड़ोसी को अपनी जान की तरह प्यार करना चाहिए। जो कोई इस नियम का पालन करता है, वह दूसरों के साथ वही बरताव करता है, जो वह चाहता है कि वे लोग उसके साथ करे।

"इसलिए हर-कोई, जो मेरे इन शब्दों को सुनता और उनपर अमल करता है, उस मनुष्य के समान कर्म करता है जो अपना मकान एक चट्टान पर बनाता है। ऐसा मनुष्य न तो वर्षा से, न बाढ़ों से, और न तूफानो से डरता है, क्योकि उसका मकान चट्टान पर बना हुआ है। लेकिन हर-कोई, जो मेरे शब्दों को सुनता है और उनपर अमल नही करता, उस विचारहीन मनुष्य के समान कर्म करता है, जो अपना मकान बालू पर बनाता है। ऐसा मकान वर्षा या तूफानों का मुकाबला नही कर सकेगा और गिरकर तहस-नहस हो जायगा।"

जब महात्मा ईसा सब बाते कह चुके तो लोग उनके उपदेशों को सुनकर विचार में पड़ गये।

: ८ :

कर्म-मार्ग

इसके बाद ईसा ने लोगों को मिसालें दे-देकर प्रभु-राज्य के अर्थ समझाने शुरू किये।

उन्होने जो पहली मिसाल दी वह इस प्रकार है :

"जब एक आदमी अपने खेत में बीज बोता है तो वह उसी की चिंता मे नही डूब जाता, बल्कि वह रात को सोता है और सवेरे उठकर अपना कारबार करता है; वह कतई परेशान नही होता कि कैसे बीज फूटेगे और बढ़ेगे। समय पाकर बीज फूटते है और फूलते है, हरियाली दिखाई देती है, डंठल बनते है, बाले निकलती है और अनाज भर जाता है। और जब अनाज पक जाता है, तभी मालिक उसे काटने के लिए मज़दूरों को वहाँ भेजता है।

"इसी तरह परमात्मा भी अपनी शक्ति से मनुष्यों मे 'स्वर्ग-राज्य' की स्थापना नही करते, बल्कि लोगों पर छोड़ देते हैं कि वे स्वतः उसकी स्थापना करे।"

ईसा ने उन्हे एक दूसरी मिसाल यह समझाने के लिए दी कि जिनकी अन्तरात्मा मे 'स्वर्ग-राज्य' नही है, उन्हे परमात्मा अपने राज्य मे शामिल नही करता। उन्हे वह इसी संसार में छोड़ देता है, जिससे वे अपने-आपको 'प्रभु-राज्य' मे प्रविष्ट होने के योग्य बनावे।

उन्होने कहा :

"स्वर्ग का राज्य' एक मछिहारे के समान है, जो अपना जाल समुद्र मे फेंकता है और सब तरह की मछलियाँ पकड़ लेता है। उन्हे पकड़ लेने के बाद वह उन्हे छाँटता है। जिनकी उसे आवश्यकता होती है, उन्हे वह रख लेता है और जो उसके काम की नही होती उन्हें वह फिर-से समुद्र मे फेंक देता है।"

इसी बात के लिए उन्होने एक तीसरी मिसाल दी :

"एक किसान-मालिक ने अपने खेत में वडा अच्छा बीज बोया था, लेकिन जब बीज उगने लगे तो उनके साथ-साथ घास भी उग आई। इसपर मजदूर आये और उन्होने मालिक से कहा, 'क्या आपने खराब बीज बोया था ? आपके खेत मे तो बहुत-सी घास उग आई है। हमें आज्ञा दीजिए, हम जाकर उसे उखाड़ डालेगे।' लेकिन मालिक ने जवाब दिया, 'नहीं, बेहतर तो यही है कि आप लोग न जायं, वरना घास को उखाड़ते हुए गेहूँ भी आप लोगों के पाँवों तले मसल जायंगे। उन्हें साथ-साथ ही उगने दो और फसल-कटाई के समय में कटाई करनेवालों से कह दूंगा कि गेहूँ तो जमा कर ले और घास को निकाल फैंके।'

"इसी प्रकार परमात्मा भी लोगों को इस बात की इजाजत नही देता कि वे दूसरों के जीवन मे दखल दे। वह खुद भी दखल नहीं देता। केवल अपने निजी यत्नों से ही हर आदमी परमात्मा तक पहुँच सकता है।"

: ९ :

प्रभु-राज्य

इन मिसालों के अलावा, ईसा ने 'स्वर्ग के राज्य' के बारे में एक और मिसाल दी।

उन्होंने कहा :

"जव एक खेत में बीज वोये जाते है तो सब-के-सब एक-से नही उगते। होता प्राय: इस प्रकार है : कुछ बीज रास्ते पर गिर जाते है और पंछी आकर उन्हे चुग जाते हैं। कुछ पथरीली धरती पर गिरते है और अगर्चे वे उगते तो

है, लेकिन थोडे ही समय के लिए उगते है, क्योकि उनके आस-पास इतनी मिट्टी नही होती कि उसमे वह अपनी जड़ों को जमा ले और इसलिए उनके अंकुर जल्दी ही सूख जाते हैं। कुछ बीज काटो पर गिरते है और कांटे उन्हे दबा लेते है। लेकिन कुछ ऐसे भी होते है, जो अच्छी ज़मीन पर गिरते हैं, पैदा होकर बडे हो जाते है और एक-एक दाने से तीस या साठ दाने फलते है।

"यही दशा आदमियो की है। कुछ ऐसे है, जो अपने दिलो मे 'स्वर्ग का राज्य' प्राप्त नही करते, उन्हें बाहरी प्रलोभन आ घेरते है और जो बोया था उसे चुरा लेते हैं। ये वे बीज हैं, जो रास्ते पर बोये गए थे। इसके बाद वे आदमी है, जो पहले तो खुशी-खुशी उपदेशो को स्वीकार करते है, लेकिन जब उनका अपमान होता है और उसके लिए उन्हे पीड़ा दी जाती है, तो वे उससे विमुख हो जाते हैं। ये वे बीज है, जो पथरीली ज़मीन पर बोये गए थे। इसके बाद वे लोग है, जो 'स्वर्ग के राज्य' के अर्थ समझते है, लेकिन उनके भीतर का ससारी मोह और संपत्ति का लोभ उन्हे दबा लेता है। ये वे बीज है जो कांटो मे बोये गए थे। लेकिन वे बीज, जो अच्छी धरती पर बोये गए थे, वे हैं, जो 'स्वर्ग के राज्य' के अर्थ समझते है और उसे अपने दिलों में जगह देते है। ये लोग फूलते-फलते है—कुछ तो तीस-गुना और कुछ साठ-गुना और कुछ सौ-गुना।

"मतलब यह कि जिसे जो दिया गया था, उसने वह सभाल रखा है, तो उसे और भी ज्यादा मिलेगा, लेकिन उस व्यक्ति से सब-कुछ छीन लिया जायगा, जिसने दिये

हुए को संभाल कर नहीं रखा। इसलिए 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करने के लिए अपनी सारी शक्ति के साथ यत्न करो। अगर आप उसमें प्रविष्ट हो सकते है, तो और किसी भी बात के लिए ईर्ष्या मत करो।

"उस आदमी की तरह काम करो, जिसे, जब यह पता चल गया कि अमुक खेत मे बड़ा भारी खजाना दबा पड़ा है, तो उसने जो-कुछ उसके पास था सब बेच कर उस खेत को ख़रीद लिया और अमीर बन गया। आपको भी वैसा ही करना चाहिए।

"सदा याद रखो कि जिस प्रकार एक छोटा-सा बीज बढ़ कर एक बड़ा पेड़ हो जाता है, उसी तरह 'स्वर्ग के राज्य' के लिए थोड़े-से यत्न का बहुत-बड़ा परिणाम मिलता है।

"हर-कोई अपने निजी यत्न से 'प्रभु-राज्य' प्राप्त कर सकता है, क्योंकि 'प्रभु-राज्य' आपके भीतर विद्यमान है।"

: १० :

आत्मिकबल

इन शब्दों को सुनने के बाद निकोडमस नाम का एक फरीसी ईसा के पास आया और उसने पूछा कि 'प्रभु-राज्य' हमारे भीतर है, यह कैसे समझ में आ सकता है? ईसा ने कहा, "प्रभु-राज्य हमारे भीतर है, इसका अर्थ यह है कि उसमे प्रविष्ट होने के लिए हमे फिर से जन्म लेना होगा।"

तब निकोडमस ने पूछा, "मनुष्य फिर से कैसे पैदा हो सकता है? क्या मनुष्य अपनी माता के गर्भ मे लौट सकता है और फिर से जन्म ले सकता है?"

ईसा ने जवाब में कहा, "फिर से जन्म लेने का यह अर्थ नही कि जिस प्रकार एक हाड़-मांस का बच्चा अपनी माँ के गर्भ से जन्म लेता है, उसी तरह जन्म लिया जाय ; बल्कि इसका मतलब यह है कि उस शक्ति का उदय हो जाय। शक्ति के उदय होने का अर्थ यह समझ लेना है कि मनुष्य मे परमात्मा की शक्ति का वास है। जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपनी माता के गर्भ से जन्म लेता है, उसी प्रकार परमात्मा की शक्ति से भी जन्म लेता है। जो-कुछ शरीर में से जन्मता है, वह शरीर का ही अंग है। उसे यातना अनुभव होती है और मरता भी है। जो-कुछ शक्ति मे से जन्मता है, वह शक्ति का अंग होता है, और वह जीवित रहता है। न तो उसे यातना हो सकती है और न वह मरता है।

"परमात्मा ने मनुष्यो मे अपनी शक्ति इसलिए उत्पन्न नही की कि वे पीड़ित हो और मर जायं, बल्कि इसलिए कि उनका जीवन सुखद और चिरस्थायी हो। प्रत्येक मनुष्य उस जीवन को प्राप्त कर सकता है। ऐसा जीवन 'स्वर्ग का राज्य' है।

"इसलिए प्रभु-राज्य का यह अर्थ नही समझना चाहिए कि किसी समय-विशेष और स्थान-विशेष मे हर-किसी के लिए 'प्रभु-राज्य' का उदय होगा; बल्कि यह कि यदि लोग अपने अन्दर की परमात्मा की शक्ति को जान लेंगे और उसके अनुसार आचरण करेंगे, तभी वे 'स्वर्ग के राज्य' मे प्रविष्ट होंगे और उन्हे यातना अथवा मृत्यु सहन नही करनी होगी। लेकिन अगर लोग अपने अन्दर की शक्ति का अनुभव नही करते और अपने शरीरों के लिए ही जीते है, तब वे यातना सहेंगे और मरेंगे।"

: ११ :

सबसे प्रेम करो

अधिकाधिक लोग ईसा के अनुयायी बनते गये और उनके उपदेशो को सुनने लगे, लेकिन फरीसियों को यह पसन्द नही था। उन्होने यह सोचना शुरू किया कि लोगों की नज़रों में ईसा को कैसे दोषी ठहराया जा सकता है ?

एक शनिवार को ईसा और उनके शिष्य खेतों मे से होकर निकल रहे थे। शिष्यों ने अनाज की बालियाँ तोड़ ली, उन्हे दोनों हाथों से मसला और अनाज के दाने खा लिये। यहूदियो की शिक्षा के अनुसार परमात्मा ने मूसा के साथ समझौता किया था कि लोग शनिवार के दिन कोई काम नही करेंगे और केवल परमात्मा की ही पूजा किया करेंगे। फरीसियों ने यह देखकर कि ईसा के शिष्यों ने शनिवार के दिन अनाज की बालियों को मसला है, उन्हे रोका और कहा :

"आपको शनिवार के दिन ऐसा नही करना चाहिए था। शनिवार के दिन तो कोई काम नही करना चाहिए, लेकिन आप लोग अनाज निकाल रहे हैं। नियम मे कहा गया है कि जो लोग शनिवार को काम करेंगे उन्हे मार डाला जायगा।"

ईसा ने यह सुना और वे बोले, "नबी ने कहा था कि परमात्मा तो प्रेम चाहते है, बलि नही। अगर आप लोगों ने उन शब्दो को समझ लिया है तो मेरे शिष्यो की निन्दा नही करनी चाहिए। शनिवारो की अपेक्षा मनुष्य अधिक महत्त्वपूर्ण है।" फरीसियों से इसका कोई उत्तर न बन पड़ा और वे चुप हो गये।

एक और दिन की बात है। कुछ फरीसियों ने ईसा को

मती के घर में दाखिल होते देखा। मती तहसीलदार था। ईसा ने उसके घर के लोगो के साथ बैठकर भोजन किया। जिन लोगो के साथ उन्होंने भोजन किया था, फरीसी उन्हे गुनहगार समझते थे। इस कारण उन्होंने ईसा पर यह दोष लगाया कि गुनहगारो के साथ भोजन करना नियम के खिलाफ है।

लेकिन ईसा ने कहा, "मैं उन लोगों को सत्य का उपदेश देता हूँ, जो उसके इच्छुक है। आप लोग अपने को ईमानदार समझते है और सोचते है कि आपको सत्य का ज्ञान है, इसलिए आपके सीखने को और कुछ भी बाकी नही रहा। इसका मतलब यह है कि जो लोग ईमानदार नही है, केवल उन्हीको शिक्षा दी जा सकती है और अगर हम उन लोगों के साथ हेल-मेल नही करेगे तो वे सचाई सीखेगे कैसे?"

इसपर जब फरीसियों से इसका कोई जवाब न बन पड़ा तो उन्होने ईसा के शिष्यो को बिना हाथ धोये खाने के लिए भला-बुरा कहना शुरू कर दिया। वे स्वत. अपने हाथ और अपनी तश्तरियाँ धोने की निजी परपरा का बड़ी कड़ाई के साथ पालन करते थे और बाजार से आई किसी भी चीज को धोये बिना नही खाते थे।

इस बारे मे ईसा ने उत्तर दिया, "आप लोग हमे इसलिए भला-बुरा कहते है कि हम खाने से पहले हाथ धोने को परपरा को नही मानते, लेकिन यह चीज ऐसी नही है जो मनुष्य के शरीर मे प्रविष्ट हो जाय और उसे अपवित्र कर दे। मनुष्य की आत्मा मे से निकलनेवाली और उसे अपवित्र बनानेवाली बुराइयाँ तो है—व्यभिचार, हत्या, चोरी, तृष्णा,

०३५

क्रोध, बेईमानी, निर्लज्जता, दुश्मनी, निंदा, अहंकार वगैरा। ये सब बुराइयाँ मनुष्य की आत्मा से निकलती है और केवल बुराई से ही मनुष्य अपवित्र हो सकता है। आपकी आत्मा मे अपने भाइयों के लिए प्रेम होना चाहिए और तब प्रत्येक वस्तु पवित्र होगी।"

: १२ :

प्रार्थना-मार्ग

एक बार ईसा अपने शिष्यो से जुदा हो गए और प्रार्थना करने लगे। जब उन्होंने प्रार्थना कर ली तो शिष्य उनके पास गये और बोले, "स्वामी, हमें प्रार्थना करने की सीख दीजिए।"

ईसा ने उनसे कहा :

"सबसे पहली बात तो यह है, आप लोगो को वैसे प्रार्थना नही करनी चाहिए जैसे कि अक्सर की जाती है, यानी कि लोग आपको प्रार्थना करते हुए देखें और उसके लिए आपकी तारीफ करें। अगर यह इस ढंग से की जाती है तो यह मनुष्यों के लिए की जाती है, और इसके बदले मनुष्य ही इनाम देते है। आत्मा को इस तरह की प्रार्थनाओं से कोई लाभ नही होता। लेकिन अगर आप प्रार्थना करना चाहते है तो ऐसे स्थान पर जाइये जहाँ आपको कोई न देखे और वहाँ अपने प्रभु के चरणों मे प्रार्थना कीजिए। प्रभु आपको आपकी आत्मा की जो आवश्यकता होगी, प्रदान करेंगे।

"जब आप प्रार्थना करे तो बहुत-सी बाते न कहिए। परमात्मा को आपकी आवश्कताओं का ज्ञान है, यहाँ तक कि अगर आप कुछ भी न माँगे, तो भी वह आपकी आत्मा की सब

आवश्यकताओ को पूरी करेगे ।

"सबसे पहले आपको यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे अंदर परमात्मा की जो शक्ति है, वह पवित्र हो; अर्थात् हमारी आत्मा मे 'स्वर्ग के राज्य' का उदय हो, हम अपनी इच्छा के अनुसार नही वरन परमात्मा की इच्छानुसार जीवन बितावे; हम अधिक के लिए इच्छा न करें बल्कि केवल अपने प्रतिदिन के भोजन की इच्छा रखें; परमात्मा इस बात मे हमारी सहायता करें कि हम अपने भाइयों के गुनाहो को माफ करें और प्रलोभनों तथा बुराइयो से बचने मे वे हमारी सहायता करे ।

"आप लोगों की प्रार्थना यह होनी चाहिए :

"हे प्रभु, तेरा वास स्वर्ग मे है । तेरा नाम पावन हो । तेरे राज्य का उदय हो । स्वर्ग के समान ही धरती पर भी तेरी इच्छा पूर्ण हो । प्रति दिन के समान आज भी हमे रोटी दे । हमे हमारे गुनाहों के लिए माफ कर, जैसेकि हम अपने प्रति गुनाह करनेवालों को माफ करते हैं । हमे प्रलोभन तथा बुराई से बचा ।

"यह है प्रार्थना करने का ढंग, लेकिन अगर आप प्रार्थना करना चाहते हैं तो पहले यह विचार करो कि आपके दिल मे किसी के प्रति क्रोध तो नही है । यदि आपको स्मरण हो कि क्रोध है तो पहले जाकर उसके साथ सुलह करो, अथवा अगर उस आदमी को पा न सके तो आपके दिल में उसके प्रति जो क्रोध है, उसे निकाल दे और उसके बाद प्रार्थना शुरू करें । तभी आपकी प्रार्थना आपके लिए उपयोगी होगी ।"

: १३ :

पश्चात्ताप से पवित्रता

एक बार की बात है कि ईसा एक फरीसी के यहाँ भोजन करने गये। जब वह वहाँ थे तो शहर की एक औरत भीतर आई। वह एक बदनाम औरत थी। उसने सुना था कि ईसा फरीसी के मकान में है और वह वहाँ जा पहुँची। उसके पास एक इत्र की बोतल थी। वह ईसा के चरणों में जा झुकी और रोई। उसके आँसू ईसा के पाँवों पर गिरे। उसने उन्हे अपने बालों से साफ कर दिया और उनपर अपनी बोतल मे से इत्र उडेल दिया।

यह देखकर फरीसी परेशान-सा हुआ और उसने सोचा कि अगर ईसा वस्तुतः नबी है तो उन्हे यह मालूम हो जाना चाहिए था कि यह औरत बदनाम है और गुनहगार है, इसलिए उसे अपने को छूने की आज्ञा नही देनी चाहिए थी।

फरीसी के विचारो को ईसा ने भांप लिया और उसे सबोधित करके उन्होने कहा :

"क्या मै आपको बताऊँ कि मै क्या सोच रहा हूँ ?"

"हाँ, बताइए," फरीसी ने कहा।

ईसा ने कहा :

"एक अमीर आदमी के दो व्यक्ति ऋणी थे। एक पचास पौंड का कर्जदार था, दूसरा पाँच पौड का। दोनों में से किसी के पास भी देने को कुछ नही था। उस अमीर आदमी ने उन दोनों को माफ कर दिया। अब आप बताइए कि दोनों मे से उस अमीर आदमी को कौन अधिक प्यार करेगा और मान देगा ?"

फरीसी ने कहा :

"निश्चय ही जो ज्यादा कर्जदार था।"

इसपर ईसा ने उस औरत की ओर संकेत करते हुए कहा :

"यही दशा आपकी और इस औरत की है। आप अपने को सही समझते है, और इसलिए परमात्मा के प्रति बहुत देनदार नही। यह औरत अपने-आपको गुनहगार समझती है, इसलिए परमात्मा के प्रति इसकी देनदारी बहुत है। जब मै आपके मकान में आया था तो आपने मुझे पांव धोने के लिए किसी तरह का पानी नही दिया था, लेकिन इस औरत ने उन्हे आँसुओं से धोया और उन्हे अपने बालों से सुखाया। आपने मुझे चूमा नही, लेकिन उसने मेरे पाँवों को चूमा। आपने सिर पर लगाने के लिए किसी तरह का तेल नही दिया, किंतु इसने मेरे पाँवों मे महगा इत्र उंडेला। वह अपने-आपको गुनहगार समझती है और इसलिए लोगों से प्यार करना उसके लिए आसान है। लेकिन आप अपने-आपको सही समझते है और इसलिए लोगों के साथ प्रेम करना आपके लिए कठिन है। लेकिन जो बहुत प्रेम करता है, उसके सब गुनाह माफ हो जाते है।"

: १४ :

जीवन-तत्त्व

एक दूसरे दिन की बात है। ईसा समरिया से होकर जा रहे थे। एक कुएँ पर बैठ गये। इस बीच उनके शिष्य नगर में रोटी खरीदने चले गये। एक औरत गांव से पानी लेने के लिए वहाँ आई और ईसा ने उसे पानी पिलाने

को कहा । उस औरत ने उनसे कहा, "क्यों पिलाऊँ, तुम यहूदी लोगों का हम समरियों से कोई वास्ता नही । फिर तुम मुझे पानी पिलाने के लिए कैसे कह सकते हो ?" ईसा ने उत्तर दिया, "अगर तुम मुझे और जो मै उपदेश करता हूँ, उसे जानती, तो तुम ऐसा कभी न कहती, बल्कि मुझे पानी पिलाती और मै तुम्हें जीवन का तत्त्व बतलाता ।"

वह औरत ईसा की बात को नही समझी और बोली, "तुम्हे यहाँ दूसरी जगह कहाँ पानी मिलेगा ? यहाँ हमारे पिता जैकब के इस कुएँ के पानी के सिवा कही पानी नही है ।"

ईसा ने उससे कहा, "जो कोई इस कुएँ का पानी पियेगा, वह दोबारा भी पीना चाहेगा, लेकिन जो-कोई मेरे दिये पानी को पी लेता है, वह हमेशा के लिए सतुष्ट हो जायगा और वह उसमें से दूसरों को भी पिलायगा ।"

उस औरत ने समझा कि ईसा दैवी बातों की चर्चा कर रहे है । वह बोली, "लेकिन मै तो समरियावासी हूँ तुम यहूदी हो । इसलिए तुम मुझे शिक्षा नही दे सकते । हमारे लोग इस पहाड़ पर प्रार्थना करते है, और तुम यहूदियों का कहना है कि परमात्मा का घर केवल यरूसलम में है ।"

ईसा ने कहा, "ऐसा कहा ज़रूर जाता था, लेकिन अब वक्त आ गया है कि मनुष्य परमात्मा की पूजा इस पहाड़ पर या यरूसलम मे नही करेंगे, न इस या उस जगह पर, बल्कि हर कोई उस परमात्मा की पूजा शक्ति और सत्य मे करेगा । परमात्मा एक शक्ति है और शक्ति और सत्य मे ही उसकी पूजा करनी होगी ।"

ईसा ने उस औरत से जो कहा उसे वह समझी नहीं,

और उसने उत्तर दिया, 'मैने सुना है कि परमात्मा का दूत आयगा और तब हर बात साफ हो जायगी।'

ईसा ने कहा, "भली औरत, जो मैने बताया है उसे समझने की कोशिश कर और इससे ज्यादा की इंतज़ार मत कर।"

: १५ :

अमल करो

ईसा ने अनेक नगरों और ग्रामो मे उपदेश किये, और उसने अपने शिष्यों को उन जगहो मे भेजा, जहाँ उनकी जाने की इच्छा थी। उन्होने उनसे कहा :

"बहुत से लोग वास्तविक जीवन के वरदान को नही जानते। मुझे उन सबपर दया आती है और मेरी इच्छा है कि जो मै जानता हूँ, उन्हे बतलाऊँ। जिस प्रकार एक किसान अपने खेत का अकेला ही प्रबंध नही कर सकता, बल्कि फसल-कटाई के लिए मजदूरों को बुलाता है, इसी तरह मै भी बुलाता हूँ। भिन्न-भिन्न नगरो मे जाओ और प्रभु-राज्य के बारे मे जो उपदेश हैं उनकी सब जगह चर्चा करो। लोगों को प्रभु-राज्य के आदेश बतलाओ और हर बात मे उन आदेशों का खुद भी पालन करो।

"मै तुम्हें भेड़ियों के बीच एक भेड के समान भेज रहा हूँ। साँपों के समान अक्लमंद और फ़ाख्ता की तरह पवित्र बनो। सबसे पहले अपना निजी सामान कुछ भी न रखो, अपने साथ कुछ भी न लो—न थैला, न रोटी, न धन। केवल तन पर कपड़े और पाँव मे जूते हो। लोगों के बीच भेदभाव मत करो।

अपने ठहरने के लिए किसी मकान को चुनो नही, बल्कि जो मकान पहले पड़े उसीमें ठहर जाओ। जब आप उसमें दाख़िल हों, तो उसमें रहनेवालों को नमस्कार करो। यदि वे आपका स्वागत करें तो भीतर जाओ, नही तो अगला मकान देखो।

"लोग आपकी बातों को सुनकर आपसे नफरत करेंगे और हमला करेंगे। वे एक से दूसरी जगह आपको खदेड़ेंगे, लेकिन निराश होने जैसी कोई बात नही। जब आपको एक गॉव से खदेड़ दिया जाय तो दूसरे मे जाओ। वहाँ से भी निकाल दे तो तीसरे में जाओ। जिस प्रकार भेड़िए भेड़ का पीछा करते है, आपका पीछा किया जायगा। आपको पीटा जायगा और आपको शासकों के सामने पेश किया जायगा ताकि आप अपने-आपको न्यायपूर्ण सिद्ध कर सकें। जब आप न्यायाधीशों और शासकों के सामने पेश किये जायं, तो जो-कुछ आप कहने जा रहे हों, उसके बारे में सोचो नहीं, बल्कि आपको मालूम होना चाहिए कि आपके भीतर परमात्मा की शक्ति वास करती है और जो आवश्यक होगा वही वह कहेगा।

"लोग आपके तन को मार सकते है; लेकिन आपकी आत्मा का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। इसलिए मनुष्यो से डरो नही। अगर आप परमात्मा की इच्छा को पूरा नही करते तो अपने तन के साथ अपनी आत्मा की हत्या करने से ही डरो। इसीसे आपको डरना चाहिए। परमात्मा की इच्छा के बिना चीटी भी नहीं मरती। उसकी इच्छा के बिना आपके सिर का एक बाल भी बांका नही हो सकता, और अगर आप उसकी रखवाली में है, तो आपको डर किसका है ?"

: १६ :

आत्मा अमर है

जिन शिष्यों को ईसा ने भेजा था वह तो एक ओर चले गये और ईसा दूसरे शिष्यो के साथ ग्रामो और वस्तियों से निकलते हुए दूसरी ओर चले गये । एक वार वे एक गांव में पहुँचे । वहाँ मार्था नाम की एक स्त्री ने उन्हे अपने घर पर आमंत्रित किया । वे उसके घर में गये और भीतर जाकर उन्होने उपदेश करना शुरू कर दिया । मार्था की वहन मेरी उनके चरणो मे बैठकर उपदेश सुनने लगी । इस बीच मार्था भोजन की तैयारी करने मे व्यस्त हो गई ।

मार्था ने देखा कि उसकी वहन ईसा के चरणों मे बैठी उनके उपदेशों को सुन रही है तो वह ईसा के पास आई और वोली, "मै अकेली ही सारा काम कर रही हूँ और मेरी बहन वैठी-वैठी आपके उपदेश सुन रही है ! उससे कहिये कि वह उठे और मेरे साथ काम करे ।"

यह सुनकर ईसा ने कहा :

"मार्था, तुम वड़ी व्यस्त हो और कितनी ही वातो की तुम्हें चिता है, लेकिन केवल एक ही चीज तो आवश्यक है । मेरी ने उसी एक आवश्यक वस्तु को चुन लिया है । उसे कोई भी उससे नही ले सकता । सच्चे जीवन के लिए आत्मा के भोजन की दरकार होती है, शरीर के भोजन की नही ।"

और इसके वारे मे उन्होने एक मिसाल दी :

"एक वार एक आदमी के खेत मे वहुत अच्छी फसल हुई । उसने सोचा, अव तो मै अपने खलिहानों को फिरसे वनाऊँगा

और वे पहलों से बड़े भी होंगे । अपना सारा सामान जमा करके मै उनमे रखूंगा । मै अपनी आत्मा से कहूँगा, 'ओ मेरी आत्मा, अब तो मेरे यहाँ हर वस्तु की वहुतायत है । सुख से रहो, खाओ, पियो और मौज की जिदगी बसर करो ।" लेकिन परमात्मा ने उससे कहा, "अरे मूर्ख, आज ही रात को तुम्हारी आत्मा तुमसे छीन ली जायगी और जो-कुछ तुमने जमा किया है दूसरों का हो जायगा ।

"यही दशा उन सबकी होती है, जो शारीरिक जीवन की तैयारियाँ करते है और आत्मा के लिए नही जीते ।

"जो अपनी निजी इच्छा को तजकर हमेशा परमात्मा की इच्छानुसार चलता है, उसीका जीवन वास्तविक जीवन है; लेकिन जो अपने शारीरिक जीवन की चिता करता है, वह अपने वास्तविक जीवन को नष्ट कर लेता है ।"

: १७ :

आत्मिक जीवन

ईसा ने एक वार कुछ लोगों को चर्चा करते सुना कि किस प्रकार पाइलेटो ने कुछ गलीलियों को मार डाला और साथ ही किस प्रकार एक मीनार गिरी और उससे अठारह आदमी कुचल गए । तव ईसा ने लोगों से कहा :

"क्या आप यह समझते है कि वे आदमी किसी बात के लिए खासतौर पर दोषी थे ? नही, हम सब जानते है कि वे हम लोगों की निस्वत कोई बुरे नही थे । जो-कुछ उनके साथ बीती वह किसी भी क्षण हमारे साथ बीत सकती है । हम सब आज अथवा कल ही मर सकते है । हम मौत से बच

नही सकते, इसलिए अपने साँसारिक-जीवन के लिए हमे चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। हम मानते है कि जल्दी ही इसका अंत हो जायगा। हमे उसकी चिन्ता करनी चाहिए कि जो मरता नही, और वह है आत्मिक जीवन।"

उन्होंने इस वात को एक मिसाल देकर समझाया :

"एक मालिक के वाग में सेव का एक पेड़ था, जिसपर कभी फूल नही लगे थे। उसने अपने माली से कहा, 'अब की मैं तीन वरस वाद आया हूँ। आशा थी कि यह पेड़ फल गया होगा, लेकिन आश्चर्य है कि अभी तक इस पर फल नही आये। इसे तो अब काट ही देना चाहिए, क्योंकि बेकार इसने जगह घेर रखी है।' लेकिन माली ने कहा, 'मालिक, हमे कुछ दिन और प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए। मैं इसके चारों ओर गड्ढा खोदकर उसमें खाद डालूँगा। शायद अगली गरमियों मे फल जाय। अगर अगले वरस भी फल नही देगा तो इसे काट दिया जायगा।'

"यही हालत हमारी है। जब हम केवल तन मे ही रहते है और आत्मिक शक्ति को फलने नही देते तो हमारा स्वामी हमें काटता नही, हमे मृत्यु का ग्रास नही वनाता; क्योकि वह हमसे फल, अर्थात्, आत्मिक जीवन की आशा करता है। लेकिन यदि हम फलते नही तो हम विनाश से वच नही सकते। इस वात को समझने के लिए कोई अक्लमंदी की जरूरत नही। हर कोई स्वत. ही इसका अनुभव कर सकता है; क्योकि हम न केवल घरेलू मामलो के वारे मे, वल्कि कुदरत की वातों के विषय मे भी तर्क करना जानते है और अनुमान कर सकते है कि क्या होगा। जब हवा पश्चिम से चलती है, हम कहते

है कि वर्षा होगी; जब दक्षिणी हवा चलती है तो हम कहते है कि मौसम अच्छा होगा, और यही होता है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि हम मौसम को तो पहले से ही बता सकते है, लेकिन हम पहले से यह नही कह सकते कि हम सबको कब मरना होगा ? हमे अपने नाशवान सांसारिक-जीवन की नही, बल्कि अमर आत्मिक-जीवन की रक्षा करनी होगी।"

: १८ :

कर्म ही प्रधान है

एक और अवसर पर ईसा ने एक मिसाल देकर लोगों को समझाया कि मनुष्य का जीवन कैसा है। उन्होंने कहा :

"एक अमीर आदमी था। एक बार उसे घर से बाहर जाना पड़ा। रवाना होने से पहले उसने अपने दासों को बुलाया और उन्हें दस पौड चाँदी दी। हरएक को एक-एक पौड देकर उसने कहा, 'जितने दिन मै बाहर रहूँ तुममें से हरएक को मेरी दी हुई चांदी से काम करते रहना चाहिए।' इतना कह-कर वह अपनी यात्रा पर चल पड़ा। जब वह चला गया तो दासों को आजादी मिल गई। वे मनमानी करते रहे। लेकिन जब मालिक लौट कर आया तो उसने दासों को बुलाया और प्रत्येक से पूछा कि उसने चांदी से क्या-क्या काम किया है। पहला आया और बोला, 'आपकी एक पौड चांदी से मैने दस पौड चांदी की कमाई की है।' मालिक ने उससे कहा, 'भलेमानस, तुमने बहुत अच्छा काम किया। तुमने एक छोटी-सी वस्तु के लिए ईमानदारी प्रकट की है, इसलिए अब मै तुम्हें बड़ी वस्तुओं के प्रबंध की जिम्मेदारी सौंपूंगा। अब

से तुम भी मेरे ही समान हो और मेरी सारी सम्पत्ति के भागीदार हो।'

"दूसरा दास आया और बोला, 'मालिक, आपकी एक पौंड चांदी से मैंने पाँच पौंड चांदी कमाई है।' मालिक ने उससे कहा, 'तुमने बहुत ठीक किया है। तुम भी मेरी ही तरह मेरी सारी जायदाद के भागीदार हो।'

"इसके बाद तीसरा दास आया और बोला, 'मालिक, यह लीजिए अपनी एक पौंड चादी। मैंने एक रूमाल मे लपेटकर इसे सभालकर रखा था, क्योंकि मै आपको जानता हूँ कि आप बहुत ही सख्त आदमी है। जहाँ आप कुछ भी रखते नही, वहाँ से आप लेते है, और जहाँ आप कुछ बोते नही वहाँ से आप काटते है, तो मुझे तो आपका बहुत ही डर था।' मालिक ने कहा, 'अरे मूरखचद, मै तुम्हारे ही शब्दो से तुम्हारा न्याय करूँगा। तुम कहते हो कि मेरे डर के कारण तुमने मेरी चाँदी को रख छोड़ा और उसका उपयोग नही किया। अगर तुम यह जानते थे कि मै बड़ा सख्त आदमी हूँ और वहाँ से भी लेता हूँ जहाँ मैने कुछ रखा नही तो फिर तुमने मेरे हुक्म के अनुसार क्यो नही किया? अगर तुमने मेरी चांदी का उपयोग किया होता तो मेरी सपत्ति की वृद्धि होती और तुमने मेरे कहे हुए को पूरा किया होता। लेकिन अब तो तुमने वही काम नही किया, जिसके लिए मैंने तुम्हे चाँदी दी थी, इसलिए वह तुम्हारे पास नही रहेगी।'

"मालिक ने उन्हे आज्ञा दी कि जिसने चांदी का उपयोग नही किया, उससे चादी ले ली जाय और उसने वह

चांदी उन लोगों को दे दी, जिन्होंने उसका बढ़िया उपयोग किया था। इसपर नौकरों ने मालिक से कहा, 'मालिक, उनके पास तो पहले ही बहुत है।' लेकिन मालिक ने कहा, 'जिन्होने उससे बहुत कमाई की है, उन्हीको दे दो, क्योकि जो दिये हुए का उपयोग करते हैं, उन्हें अधिक मिलेगा। जो उसका उपयोग नही करते, उनसे प्रत्येक वस्तु छीन ली जायगी।'

"यही अवस्था मनुष्य-जीवन की है," ईसा ने कहा। "अमीर मालिक परमात्मा है। मनुष्य उसके दास है। मनुष्य मे परमात्मा की जो शक्ति है, वह है चांदी। जिस तरह मालिक ने खुद अपनी चांदी से कोई काम नही लिया और उसने हरएक को सौंपी हुई चांदी से काम करने का आदेश किया, इसी तरह परमात्मा ने मनुष्यों को अपनी शक्ति प्रदान की है और आदेश किया है कि वे अपने भीतर उसकी वृद्धि करें और जो-कुछ उन्हे दिया गया है उसका उपयोग करे। अक्लमद आदमी समझते है कि आत्मिक-जीवन उन्हे परमात्मा की इच्छा पूरी करने के लिए दिया गया है और वे अपने अन्दर आत्मिक-जीवन की वृद्धि करते है और परमात्मा की शक्ति के भागीदार बन जाते है। लेकिन, मूर्ख दास के समान, बुद्धिहीन लोग अपने शारीरिक-जीवन के नाश से डरते है और परमात्मा की इच्छानुसार नही बल्कि अपनी ही मर्जी से काम करते हैं। इसलिए वे सच्चे जीवन को खो बैठते है।

"ऐसे लोग जीवन-शक्ति को नष्ट कर लेते है, जो सब से ज्यादा कीमती है। जो कोई आत्मिक-शक्ति की बजाय शारीरिक-जीवन को असली जीवन समझता है, उससे बढ़कर

उसकी कोई भूल नही हो सकती। हर-किसी को जीवन-शक्ति के साथ एकाकार हो जाना चाहिए। जो उसके साथ एकाकार नहीं होना, वह उसके विरुद्ध है। हर-किसी को जीवन-शक्ति का अनुपालन करना चाहिए, निजी शरीर का नही।"

: १६ :

विकारों से बचो

एक दिन ईसा के पास कुछ बच्चे आये। उनके शिष्यों ने उन्हे भगाना शुरू कर दिया, लेकिन ईसा ने यह देखा तो बोले

"तुम्हे बच्चो को वापस नही लौटाना चाहिए। बच्चों को भगाना नही चाहिए, बल्कि हमे उनसे सीखना चाहिए, क्योंकि वे वयस्क लोगों की अपेक्षा प्रभु-राज्य के अधिक निकट है। बच्चे बुरी-बुरी गालियो का प्रयोग नही करते, वे ईर्ष्या नहीं करते, व्यभिचार नही करते, कसमे नही खाते, किसी के साथ मुकदमेबाजी नही करते, और अपनी निजी जाति और दूसरी जातियो मे किसी तरह का भेद-भाव भी नहीं करते। बड़े लोगो की निस्बत बच्चे 'स्वर्ग के राज्य' के अधिक निकट हैं। किसी को भी बच्चों को नही खदेड़ना चाहिए, बल्कि इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे प्रलोभन मे न फँसे।

"प्रलोभन कल्याण और अच्छाई का जामा पहनकर मनुष्यो को बहुत ही बुरे-बुरे काम करने के कारण बनकर उन्हे नष्ट कर देते है। यदि मनुष्य प्रलोभन मे फँसता है तो वह अपने शरीर और अपनी आत्मा दोनो का ही नाश करता है। इसलिए प्रलोभन में फँसने की बजाय शारीरिक यातना

सहन करना बेहतर है। जिस प्रकार एक लोमड़ी अपने पंजे को जाल मे फँसा लेने पर छुटकारे के लिए उसे नोचती है, इसी तरह हर मनुष्य के लिए यह कही बेहतर है कि वह प्रलोभनों के आगे झुकने की बजाय अपने शरीर की यातना को सहन करे। बुराई का आदी बनने और उसे निरंतर बढ़ने देने के बजाय न केवल एक हाथ या एक पाँव को ही, बल्कि समूचे शरीर तक को मार डालना बेहतर है। प्रलोभनों से ससार में दुख उत्पन्न होते हैं। दुनिया मे सारी बुराइयों की जड़ प्रलोभन है।"

: २० :

सबसे बुरा क्रोध

ईसा ने यह भी कहा कि सब प्रलोभनों में क्रोध सबसे बुरा है।

"एक मनुष्य अपने भाई से उसके गुनाहों के लिए क्रोध करता है और सोचता है कि क्रोध करने से वह अपने भाई को उसके गुनाहों से मुक्त कर सकता है। लेकिन वह भूल जाता है कि हममें से एक भी ऐसा नही जो अपने भाई का न्याय कर सके, क्योंकि हममें से हरएक गुनाहों से भरा हुआ है और अपने भाई को ठीक करने से पहले हमें अपने-आपको ठीक करना होगा—अन्यथा हम अपने भाई की आँखों के एक छोटे-से तिल को तो देख लेंगे और अपनी आँखों के ताड़ की ओर ध्यान नही देंगे। इसी तरह अगर आपका यह विचार है कि आपके भाई ने बुरा काम किया है तो उसके साथ अकेले में बात कर सकने के लिए कोई समय और स्थान

निश्चित करो और उसके विरुद्ध जो-कुछ आपके मन में है, उसे प्यार से बताओ। अगर वह आपका दुश्मन होने की बजाय आपकी बातो पर ध्यान देता है तो वह आपका मित्र बन जायगा। लेकिन अगर वह आपकी बातों पर ध्यान नही देता, तो उसके लिए दुख प्रकट करो और उसे अकेला छोड़ दो।"

तब एक शिष्य ने पूछा, "लेकिन अगर वह मेरी बात नही सुनता और मेरा अपमान करता है तो भी क्या मुझे उसे माफ कर देना चाहिए? अगर वह बार-बार मेरा अपमान करता है, तो क्या इतने पर भी मुझें उसे माफ कर देना चाहिए?"

ईसा ने उत्तर दिया, "हमे न केवल बार-बार, बल्कि हमेशा उसे माफ कर देना चाहिए, क्योंकि जिस तरह हमारे पश्चाताप करने पर परमात्मा हमे हमारे सब गुनाहों के लिए माफ कर देता है, उसी तरह हमे भी अपने भाइयों को हमेशा माफ करना चाहिए।"

: २१ :

सम-भाव

इस बात को स्पष्ट करने के लिए ईसा ने उन्हे यह मिसाल दी :

"एक अमीर आदमी ने अपने कर्जदारो के साथ हिसाब करना शुरू किया। एक कर्जदार को उसके सामने पेश किया गया, जो एक हजार पौंड का उसका ऋणी था, लेकिन उसके पास चुकाने को एक कौड़ी भी नहीं थी। वह अमीर आदमी कर्जदार की जायदाद, उसके बीबी-बच्चों और खुद उस आदमी तक को नीलाम कर सकता था। लेकिन उस ऋणी ने दया की

याचना की और अमीर आदमी को उसपर तरस आ गया। उसने उसका सारा ऋण माफ कर दिया। जब उसे माफी दे दी गई तो उसके पास एक गरीब आदमी आया। यह गरीब आदमी कुछ थोड़े-से का ही उसका कर्जदार था। उसने अपने ऋण को माफ कराना चाहा। लेकिन जिस कर्जदार को सारे कर्ज की माफी दी जा चुकी थी वह उस गरीब आदमी के ऋण को माफ नही करना चाहता था, बल्कि उसने उससे फौरन भुगतान की माँग की। तंग होने के कारण गरीब आदमी ने बहुत हाथ-पाँव जोड़े, पर उसने उसपर तरस नहीं खाया और उसे जेल भिजवा दिया। यह चर्चा सब जगह फैल गई, लोग उस अमीर आदमी के पास आये और उसे बतलाया कि उसके कर्जदार ने क्या किया है। इसपर अमीर आदमी ने अपने कर्जदार को वापस बुलाया, और बोला, 'तुम्हारे कहने पर मैने तुम्हारा सारा ऋण माफ कर दिया था। तुम्हें भी मेरी ही तरह अपने कर्जदार का कर्जा माफ कर देना चाहिए था। लेकिन तुमने यह क्या किया है ?' इसके बाद उस अमीर आदमी ने अपने कर्जदार के खिलाफ भी मुकदमा दायर कर दिया।

"जो लोग हमारे प्रति दोपी है, हम अगर उन्हे दिल से माफ नही करते तो ऐसा ही कुछ हमारे साथ भी होता है। अपने भाई के साथ हमारा हर झगड़ा हमे वधन में डालता जाता है और हमे परमात्मा से दूर-ही-दूर करता जाता है। इसलिए परमात्मा से दूर न हो जाने के लिए हमे अपने भाइयों को माफ कर देना होगा और सब मनुष्यों के साथ शांतिपूर्वक और प्रेमपूर्वक रहना होगा।"

: २२ :

पत्नी-व्रत-पालन

एक बार कुछ फरीसी ईसा के पास आये और उनसे पूछा कि अगर एक आदमी अपनी पत्नी को त्याग दे और दूसरी कर ले तो आपके क्या विचार हैं ? ईसा ने उत्तर दिया :

"आप जानते हैं कि केवल एक पिता-माता से ही एक बच्चे का जन्म हो सकता है। परमात्मा का यही नियम है और परमात्मा ने जो नियम बनाया है, उसे मनुष्य को भंग नहीं करना चाहिए। अगर एक आदमी परमात्मा के बनाये नियम को भंग करता है और अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी कर लेता है, तो वह तिहेरा गुनाह करता है—पहले तो वह अपने प्रति गुनहगार है, दूसरे अपनी पत्नी के प्रति, और तीसरे अन्य लोगों के प्रति। वह अपने-आपको हानि पहुँचाता है, क्योंकि वह अपने को विषय-वासना का आदी बनाता है। वह अपनी पत्नी को हानि पहुँचाता है, क्योंकि वह उसे त्यागकर उसे बुराई करने के लिए विवश करता है। वह दूसरे लोगों को हानि पहुँचाता है, क्योंकि वह उनके सामने व्यभिचार का उदाहरण उपस्थित करके उन्हे प्रलोभन देता है।"

तब शिष्यों ने ईसा से कहा, "केवल एक ही पत्नी के साथ जीवन बिताना तो बहुत कठिन है। अगर एक आदमी को मृत्यु-पर्यन्त एक स्त्री के साथ, यह सोचे बिना कि वह कैसी है, रहना ही होगा, तो सबसे अच्छा तो यह है कि ब्याह ही न किया जाय।"

ईसा ने उन्हें उत्तर दिया, "कोई चाहे तो ब्याह नहीं भी कर सकता। लेकिन अगर एक आदमी पत्नी के बिना रहना

चाहता है तो उसे सर्वथा पवित्र रहना होगा और स्त्रियों के वारे मे सोचना भी नही होगा । अगर कोई आदमी ऐसा कर सकता है तो बहुत ही अच्छा है, लेकिन अगर कोई आदमी ऐसा जीवन न विता सके तो उसे ब्याह कर लेना चाहिए और मृत्यु-पर्यन्त एक ही पत्नी के साथ रहना चाहिए—उसे अपने-आपको दूसरी स्त्रियो के साथ मोह-जाल में नही फँसने देना चाहिए ।"

: २३ :

नियमों में दृढ़ता

एक दिन गिर्जाघर के लिए कर वसूली करने वाले पतरस के पास आये और उससे कहा, "क्या तुम्हारे स्वामी देनदारी का भुगतान करेंगे ?" पतरस ने कहा कि जरूर । ईसा ने यह सुन कर पतरस से पूछा, "तुम्हारी राय मे, राजा करों को किससे वसूल करता है—अपने बेटों से या मुसाफिरों से ?" पतरस ने कहा, "मुसाफिरों से ।" इसपर ईसा ने कहा, "अगर हम परमात्मा के पुत्र है तो हमें दशमांश अदा करने की जरूरत नही । लेकिन मनुष्यो को प्रलोभन मे न फँसने देने के लिए, उन्हे अदा कर दो, इसलिए नही कि हमपर यह देनदारी है, बल्कि इसलिए कि उन्हे प्रलोभन में न फँसने दिया जाय ।"

एक दूसरे दिन की बात है कि कुछ फरीसियों ने बादशाह के अफसरों के साथ एक समझौता किया और वे ईसा के पास आये । उनकी कोशिश थी कि ईसा को उन्हींके शब्दों के आधार पर फाँसा जाय और उनको यह भी देखना था कि वह

बादशाह के प्रति अपनी जिम्मेदारी को मानता है या नही। उन्होने ईसा से कहा, "तुम हर बात की सचाई के साथ शिक्षा देते हो। इसलिए हमें बताओ, क्या हमे बादशाह को कर अदा करने चाहिएं ?" ईसा ने कहा, "मुझे वह वस्तु दिखाओ जिसके द्वारा आप बादशाह को कर अदा करते है।" उन्होंने उन्हे एक सिक्का दिखाया। उस सिक्के पर बादशाह के सिर की मोहर लगी थी। ईसा ने उसकी ओर इशारा किया और कहा, "जो बादशाह का है, वह बादशाह को दो, लेकिन जो परमात्मा का है यानी आपकी आत्मा—वह सिवा परमात्मा के किसी दूसरे को मत दो। आपका धन, संपत्ति, काम—हर चीज जो कोई भी तुमसे मांगे, उसे दे दो, लेकिन परमात्मा के नियमो के जो विरुद्ध हो, वह किसी के लिए भी मत करो।"

: २४ :

नाश नहीं, रक्षा

एक दिन ऐसा हुआ कि ईसा के शिष्य एक गांव मे आये और उन्होंने रात वही बिताने की स्वीकृति चाही, लेकिन कोई भी उन्हे अपने घर में ठहराने को तैयार न था। तब शिष्य ईसा के पास आये और उन्हे इस बारे मे बतलाते हुए बोले, "ऐसे नीच लोग यहां रहते हैं—वे तो इस काबिल है कि उन-पर बिजली गिरे और वे मर जायं।"

ईसा को यह सुनकर दु ख हुआ। वे बोले, "तुम लोग यह नही समझते कि तुम में कौन-सी शक्ति है। मै इस बात की शिक्षा नही देता कि नाश कैसे किया जाता है, बल्कि यह कि लोगो को बचाया कैसे जाता है। यह कैसे हो सकता है

कि कोई अपने पड़ोसी के लिए बुरा सोचे ? हर आदमी मे आप ही के समान परमात्मा की शक्ति का वास है और आपको अपने भीतर की उस शक्ति के लिए बुरा नही सोचना चाहिए।"

एक दूसरे समय मे मती और फरीसी ईसा के पास एक औरत लाये, जो व्यभिचार मे पकड़ी गई थी। उन्होने उसे पेश करते हुए कहा, "मालिक, यह औरत व्यभिचार में पकड़ी गई है और हजरत मूसा के नियमानुसार ऐसी औरत को पत्थरों से मार डालना चाहिए। आपको इस विषय मे क्या कहना है ?"

ईसा को ललचाने के लिए उन्होने वैसा कहा था। अगर वे यह कहते कि उसे पत्थरों से मारना चाहिए तो ऐसा कहना उनके इस उपदेश के विपरीत होता कि सबके साथ प्रेम करो। लेकिन अगर उन्होंने यह कहा होता कि ऐसा नही करना चाहिए तो उनका यह कथन हजरत मूसा के नियम के विरुद्ध होता। जो हो, ईसा ने कोई उत्तर नही दिया, लेकिन गर्दन नीचे झुका ली और रेत में अपनी अंगुली से लिखने लगे।

उन्होने दोबारा उनसे वही बात पूछी। तब उन्होंने सिर उठाया और बोले, "आप कहते है कि नियमानुसार उसे पत्थरो से मारना चाहिए—तो वैसा ही करो। लेकिन पहले उस आदमी को उसके पत्थर मारना होगा कि जो खुद बेगुनाह हो।" इतना कहकर उन्होने फिर अपना सिर झुका लिया और फिर धरती पर लिखने लगे। ईसा की बात सुनकर शिकायत करने वाले एक-एक करके खिसकने शुरू हो गए और ईसा उस औरत के साथ वहाँ अकेले रह गये।

इसके बाद ईसा ने सिर उठाया और उस औरत के सिवा और किसी को न देखकर उन्होंने उससे कहा, "जान पड़ता है

कि किसी ने भी तुम्हे सज़ा नहीं दी ?" उसने उत्तर दिया, "किसी ने भी नही, प्रभु !"

"तो फिर मैं भी तुम्हे सज़ा नही देता," ईसा ने कहा। "जाओ, आइंदा गुनाह न करना।"

: २५ :

सहानुभूति और प्रेम

ईसा ने लोगो को शिक्षा दी कि सब मनुष्य परमात्मा की ही संतान है। इसलिए परमात्मा का आदेश है कि उसे और अपने पड़ोसी से प्रेम करो।

जब एक कानूनदां ने यह सुना तो उसने सोचा कि ईसा को उसीके शब्दो मे झूठा साबित करना चाहिए। उन्हे यह जतलाने के लिए कि सब मनुष्य समान नही है, और यह भी कि भिन्न जातियो के मनुष्य समान रूप मे परमात्मा के पुत्र नही हो सकते, उसने ईसा से पूछा, "आप हमे अपने पड़ोसी के साथ प्रेम करने की शिक्षा देते है। लेकिन मेरा पड़ोसी कौन है ?"

ईसा ने उसे एक मिसाल देकर उत्तर दिया :

"एक अमीर यहूदी था। एक बार ऐसा हुआ कि जब वह घर वापस आ रहा था तो उसपर चोरो ने हमला कर दिया। चोरो ने उसे पीटा, लूटा, और सड़क के किनारे छोड़ कर चल दिये। एक यहूदी पुरोहित उधर से निकला। उसने उस घायल आदमी को देखा, लेकिन वह रुका नही और आगे निकल गया। इसके बाद एक और यहूदी वहाँ से गुजरा और उसने भी घायल आदमी को देखा और

चला गया। इसके बाद दूसरी जाति का एक आदमी उस सड़क पर से निकला। वह समरिया का रहनेवाला था। उसने घायल आदमी को देखा और यह खयाल किये बिना कि यहूदी समरियावालों को अपना पड़ोसी नही समझते, बल्कि उन्हे विदेशी तथा शत्रु मानते हैं—उसने यहूदी पर तरस खाया, उसे उठाया और अपने गधे पर रखकर उसे एक सराय में ले गया। वहाँ उसने उसके घावों को साफ किया और मरहम-पट्टी की। उसके लिए सराय के मालिक को भाड़ा दिया और जब उसकी जरूरत न रही, तब वह वहाँ से गया।

"आप पूछते हैं, कौन किसका पड़ोसी है ?" ईसा ने कहा, "जिसके हृदय में प्रेम है वह प्रत्येक मनुष्य को अपना पड़ोसी मानता है, भले ही वह किसी भी जाति का क्यों न हो।"

: २६ :

बुराई से बुराई दूर नहीं होती

ईसा के उपदेश अधिकाधिक फैलते गए और फरीसी उससे उतने ही ज्यादा नाराज होते गए। उन्होने लोगों से कहा, "उसकी बातें मत सुनो। वह तुमको धोखा दे रहा है। अगर तुम लोग उसके आदेशों पर चलोगे तो दुनिया में वर्त-मान से भी ज्यादा बुराई हो जायगी।"

ईसा ने यह सुना और उन्होने उनसे कहा :

"आप कहते है कि अगर मै लोगों को यह शिक्षा देता हूँ कि धन-दौलत की चाह न करो, बल्कि गरीबी से रहो; क्रोध न करो, आँख के बदले आँख और दांत के बदले दांत की माँग न करो, बल्कि सब बातों को सहन करो और हरेक से

प्रेम करो। मै भलाई के द्वारा बुराई को दूर करता हूँ और आप कहते हैं कि यदि लोगों ने मेरे उपदेशों पर अमल किया तो उनका जीवन पहले से भी ज्यादा बुरा हो जायगा। पुरानी बुराई की जगह एक नई बुराई हो जायगी। यह सच नहीं है। मै एक बुराई की जगह दूसरी बुराई नहीं पैदा करता; लेकिन आप लोग है कि जो बुराई को बुराई से खदेड़ना चाहते है। आप लोग बुराई का नाश धमकियो, फांसियों, कसमों और हत्याओं से करना चाहते है। लेकिन तब भी बुराई का नाश नही हो पाता। यह इस तरह नप्ट भी नही हो सकती, क्योंकि कोई भी शक्ति अपने-आपको नप्ट नही कर सकती। मै ऐसे साधनों से बुराई को दूर नही करता, जिनका आप उपयोग करते है। मै अच्छाई से बुराई का नाश करता हूँ। मै मनुप्यो को उन आदेशों पर अमल करने का आह्वान करके बुराई का नाश करता हूँ, जो उन्हे सब बुराइयों से बचायगे।"

: २७ :

आध्यात्मिक जीवन

एक दिन ईसा के पास उसकी माँ और उसके भाई आये। ईसा के चारो ओर इतने लोग थे कि वे उनतक नहीं पहुँच सकते थे। एक आदमी ने इस बात को देखा और वह ईसा के पास आया, बोला, "आपके सम्बन्धी—आपकी माँ और आपके भाई—बाहर खड़े है और आपसे मिलना चाहते है।"

ईसा ने कहा, "जो परम-पिता की इच्छाको जानते हैं और उसकी इच्छा का पालन करते है, वे ही मेरी माँ और मेरे भाई हैं।

"हर आदमी के लिए अपने पिता, अपनी माँ, अपनी पत्नी अपने बच्चों, अपने भाइयों, अपनी बहनों, अपनी सारी जायदाद अथवा अपने शारीरिक जीवन तक से परम-पिता की इच्छा अधिक महत्त्वपूर्ण होनी चाहिए।

"सांसारिक मामलों में हर समझदार आदमी कोई काम करने से पहले इस बात का हिसाब लगा लेता है कि जो कुछ वह करने जा रहा है उससे उसे लाभ भी होगा या नही? अगर वह लाभदायक है तो उसे करता है। अगर नही तो उसे नही करता। अगर एक आदमी मकान बनाना चाहता है तो वह शुरू करने से पहले यह विचार करता है और गिनती करता है कि उसे कितने रुपये की आवश्यकता होगी। उसके पास कितने रुपये है? मकान पूरा करने के लिए काफी होंगे या नही? ऐसा तो नही होगा कि जो मकान शुरू किया वह पूरा ही न हो और शक्ति और समय बर्बाद हो। इसी तरह हर बादशाह, अगर वह लड़ाई करना चाहता है, पहले यह सोचता है कि दस हजार आदमियों से वह बीस हज़ार आदमियों के साथ लड़ सकता है या नही। अगर वह हिसाब लगाता है कि वह नही लड़ सकता तो सुलह के लिए दूत भेज देता है और लड़ता नही।

"इसी तरह हर आदमी को यह समझ लेना चाहिए कि जिस सब-कुछ को वह अपना समझता है—अपना परिवार, अपनी जायदाद और अपना खुद का शारीरिक जीवन—वह आज या कल उससे छिन जायगा और एक वस्तु जो उसकी अपनी है और जो कभी भी उससे नही छिनेगी, वह है उसका आध्यात्मिक जीवन और केवल उसी की वह चिंता कर सकता

है और उसे करनी भी चाहिए।"

यह सुनकर एक आदमी बोला, "यह तो ठीक ही है कि आध्यात्मिक जीवन होना चाहिए, लेकिन यह मुनासिब कैसे हो सकता है कि हम सर्वस्व ही त्याग दें और इस तरह का जीवन ही न रहे ?"

ईसा ने उत्तर दिया :

"हर कोई जानता है कि आध्यात्मिक जीवन का अस्तित्व है और केवल यही नही मरता है। आप सब इसे जानते है, लेकिन जो आप जानते हैं, उसपर अमल नहीं करते—इसलिए नही कि आप उसपर सन्देह करते हैं, बल्कि इसलिए कि आप झूठी चिताओ के कारण वास्तविक जीवन से विमुख हैं।"

और उन्होने उन्हे यह कथा सुनाई :

"एक मालिक ने एक भोज देने की तैयारी की। उसने महमानो को न्यौता देने के लिए अपने नौकरो को भेजा, लेकिन महमानो ने आने से इन्कार कर दिया। एक ने कहा, 'मैंने कुछ जमीन खरीदी है, इसलिए मुझे वहां जाना है।' दूसरे ने कहा, 'मैंने कुछ जानवर खरीदे है और मुझे खेतो में हल चलाना है।' तीसरे ने कहा, 'मैंने व्याह किया है, और आज मेरा विवाह-भोज है।' नौकर खाली लौट आये और उन्होने मालिक को बताया कि कोई नही आयगा। इसके बाद मालिक ने भिखारियो को न्यौतने के लिए भेजा। भिखारियों ने आने से इन्कार नही किया और उन्होने दावत खाई।

"इसी तरह, जब मनुष्य शारीरिक चिताओ से मुक्त होते है, तभी वे आध्यात्मिक जीवन को जान सकते हैं।"

: २८ :

अच्छा जीवन

एक बार एक नौजवान ईसा के पास आया और उनके सामने घुटने टेककर बोला, "मेरे अच्छे मालिक, मुझे बताओ, अमर-जीवन प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना होगा।"

ईसा ने उत्तर दिया, "तुम मुझे अच्छा क्यो कहते हो ? सिवा परमात्मा के कोई अच्छा नही। तुम उसके सब आदेशों को जानते हो। उनपर अमल करो।"

नौजवान ने पूछा, "कौन से आदेशों का ? आदेश तो बहुत-से है।"

ईसा ने उत्तर दिया, "हत्या न करो, व्यभिचार न करो, झूठ न बोलो, चोरी न करो, किसी का जी न दुखाओ और अपने माँ-बाप की इज्जत करो।"

उस आदमी ने कहा, "बचपन से ही मै इन आदेशों पर अमल करता आया हूँ।"

ईसा ने उसकी ओर देखा और उन्हे वह भला लगा। उन्होंने कहा, "अब भी तुममे एक बात की कमी है। जाओ, अपना सबकुछ बेच डालो और उसे गरीबों मे बाँट दो।"

नौजवान को यह सुनकर दु.ख हुआ और वह बिना जवाब दिये चला गया, क्योकि वह बहुत अमीर था।

ईसा ने अपने शिष्यों से कहा :

"तुम देखते हो कि एक अमीर आदमी के लिए 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करना कितना मुश्किल है!" ये शब्द सुनकर शिष्यों को निराशा हुई, लेकिन ईसा ने उन्हें दोहराया और कहा, "हाँ, बच्चो, अमीर आदमी के लिए प्रभु-राज्य मे

दाखिल होना बेहद मुश्किल है।

"एक ऊँट का सुई के छेद मे से निकलना सहज है; लेकिन एक अमीर के लिए 'स्वर्ग के राज्य' मे प्रवेश करना आसान नही।" ये शब्द सुनकर उन्हे और भी निराशा हुई, और उन्होंने, परस्पर कहा "अगर एक आदमी के पास कुछ भी न हो तो वह क्यो-कर जिन्दगी बसर करेगा ? वह जड़ हो जायगा और भूखो मरेगा।" लेकिन ईसा ने कहा, "केवल भौतिक मनुष्य को ही यह डरावना लगता है, लेकिन आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए यह सहज है। जो इसपर यकीन करेगा और अमल करेगा, उसे पता हो जायगा कि यह सच है।"

: २६ :

स्वर्ग और नरक

ईसा ने यह भी कहा, "आप एक ही वक्त मे दो मालिकों—परमात्मा और दौलत की सेवा नही कर सकते। अर्थात् परमात्मा की इच्छा और अपनी निजी इच्छा एक साथ नही साध सकते। आपको दोनो मे से एक को चुनना होगा और दोनो मे से एक की सेवा करनी होगी।"

फरीसियो ने, जो दौलत को प्यार करते थे, यह सुना। वे ईसा के इन शब्दो पर हँसे। ईसा ने उनसे कहा, 'आप समझते हैं कि आप दर-असल इज्जत के काबिल है, क्योकि मनुष्य आपकी दौलत के कारण आपकी इज्जत करते हैं ?

"ऐसा नही है, परमात्मा बाहरी वस्तुओ को नही देखता, बल्कि वह तो जो दिल मे है उसे देखता है। मनुष्य जिन वस्तुओ को बहुमूल्य समझता है, परमात्मा की नजर में वे

मूल्यहीन हैं। 'स्वर्ग के राज्य' में अमीर नहीं, बल्कि गरीब प्रवेश पाते है।"

ईसा जानते थे कि फरीसियों का यह विश्वास है कि मृत्यु के बाद कुछ लोग नरक में जाते है और कुछ स्वर्ग में, उन्होने दौलत के बारे में उन्हें यह मिसाल दी :

"एक आदमी था, जो बेहद अमीर था। वह खूब खाता-पीता, बढ़िया-से-बढ़िया कपड़े पहनता, और हररोज मौज करता। उसी जगह एक अपाहिज भिखारी रहता था, जिसका नाम लाजरस था। लाजरस अमीर आदमी के सहन में इस आशा से आया कि उसे उसके भोजन की बचीखुची झूठन मिल जायगी। लेकिन उसे कुछ भी न मिला, क्योंकि अमीर आदमी के कुत्ते झूठन को चट कर गये थे और वे लाजरस के जख्मों को भी चाटते थे। वह अमीर आदमी और लाजरस दोनों मर गये और दोजख में पड़े। अमीर आदमी ने कुछ ही फासले पर अब्राहीम और उसके साथ अपाहिज लाजरस को देखा, वह बोला :

"परम-पिता अब्राहीम, मै आपको कष्ट देने का साहस नहीं करता, लेकिन मै आपके साथ अपाहिज लाजरस को देख रहा हूँ। वह मेरे फाटक के बाहर पड़ा रहता था। उसे मेरे पास भेजो और उसे अपनी अंगुली पानी में डुबो कर मेरा गला ठंडा करने दो, क्योंकि मै आग में जला जा रहा हूँ।" लेकिन अब्राहीम ने कहा, "मै लाजरस को लपटों मे तुम्हारे पास क्यों भेजूं ? भौतिक संसार मे जो कुछ तुम्हे चाहिए था, सब तुम्हारे पास था और लाजरस के पास सिवा दुःख के कुछ भी नहीं था। जो कुछ तुम कहो मै करने को तैयार हूँ, लेकिन

यह नही कर सकता, क्योंकि तुम्हारे और हमारे बीच आवागमन नहीं।" इसपर अमीर आदमी ने कहा, "परम-पिता अब्राहीम, अगर यह ऐसा ही है तो कम-से-कम लाजरस को मेरे घर ही भेज दो। मै पाँच भाइयो को छोड़ आया था और मैं उनके लिए परेशान हूँ। उसे उनको बता आने दो कि दौलत से कितनी बुराइयाँ होती हैं, अन्यथा उन्हे भी मेरी ही तरह यातना सहनी पडेगी।" अब्राहीम ने कहा, "वे यह जानते है। हजरत मूसा और सब नबियों ने इसकी चर्चा की है।" अमीर आदमी ने उत्तर दिया, "इसपर भी अगर कोई मुर्दो मे से उठकर उनके पास जाय तो यह अच्छा ही होगा। इससे उनको अपने-आप पर विचार करने का मौका मिलेगा।" लेकिन अब्राहीम ने उत्तर दिया, "अगर वे हजरत मूसा और नबियों की नही सुनते तो वे मुर्दो में से उठनेवाले किसी की भी नही सुनेंगे।"

: २० :

परमात्मा सर्वत्र है

इसके बाद ईसा गैलिली मे गये और अपने माँ-बाप के साथ वहाँ रहे। जब यहूदियों की फसल-कटाई की दावत का दिन आया तो ईसा के भाई उसमे जाने के लिए तैयार हुए। उन्होने ईसा से भी भोज मे चलने को कहा। वे उनके उपदेशों मे विश्वास नही करते थे। उनसे बोले, "तुम कहते हो कि यहूदियो की पूजा-विधि गलत है और तुम परमात्मा की पूजा के सही ढंग को जानते हो। अगर तुम दर-असल यह समझते हो कि दूसरो को जो पता नहीं उसे तुम जानते हो तो हमारे

साथ दावत में चलो। वहाँ बहुत-से लोग आये होंगे और तुम उन सबके सामने अपने उपदेशों का ऐलान कर सकोगे। अगर वे सब तुम्हारा यकीन कर लेंगे तो तुम्हारे शिष्यों को पता लग जायगा कि तुम ठीक हो। तुम अपने को छिपाते क्यो हो? तुम पूजा के सही ढग को जानते हो, तो फिर सभी को वह ढंग बताओ!"

ईसा ने उनसे कहा, "हर बात के लिए एक समय होता है। मै वक्त आने पर जाऊँगा।" इस तरह उनके भाई चले गए, लेकिन वे घर पर ही रहे।

दावत में बहुत-से लोग शामिल हुए थे। ईसा के उपदेशों के बारे में उनकी बहस होने लगी। कुछ कहते थे कि उसके उपदेश सच्चे है, दूसरे कहते थे कि उससे लोग महज परेशान होते है। जब आधी दावत हो चुकी तो ईसा खुद यरूसलम मे आये और गिर्जाघर में गये। गिर्जाघर की ड्योढ़ी मे गौएँ और बैल, भेड़े और पिजरों में वंद कबूतर आदि जानवर थे। वहीं रुपये-पैसों की दुकान लगाकर दुकानदार भी बैठे थे। इस सब की परमात्मा के सामने चढ़ावे के लिए आवश्यकता थी। लेकिन ईसा ने, गिर्जा में प्रवेश करते हुए और बहुत-से लोगों को वहाँ देखकर, सबसे पहले सारे पशुओं को गिर्जा से बाहर हांक दिया और कबूतरों को उड़ा दिया। उन्होंने दुकानदारों की मेजें पलट दी और उसके बाद लोगो से कहा:

"इसाइया नबी ने कहा था, 'परमात्मा का घर यरूसलम के गिर्जे में नहीं है, बल्कि भगवत्‌जनों का सारा संसार ही उसका घर है।' और जरमिया नबी ने भी कहा था, 'इस झूठी कहावत पर विश्वास मत करो कि यह 'अमरत्व' का घर

है। इस पर यकीन मत करो, लेकिन अपने जीवनों मे परिवर्तन करो और झूठे तरीके से परीक्षा न करो, न मुसाफिर, विधवा, और अनाथ को दुख दो। बेगुनाहों का खून मत बहाओ और परमात्मा के घर मे यह कहने के लिए मत जाओ, "अब हम निडर होकर बुराई कर सकते है।' मेरे घर को चोरो का अड्डा मत बनाओ। मै, परमात्मा, तुम्हारी बलियों से खुश नही
९ होता। मै एक-दूसरे के साथ तुम्हारे प्रेम को देखकर खुश होता हूँ।" समझ लो कि नबी के इन शब्दो का अर्थ यह है, "जब लोग एक-दूसरे के साथ प्रेम करते है तो उनकी यह सारी दुनिया ही जीवित गिर्जाघर है। हमे गिर्जा में ही परमात्मा की पूजा नही करनी, प्रत्युत उसकी शक्ति मे वास करते हुए और अच्छे कर्मों द्वारा उसकी पूजा करनी है।"

सब लोगो ने उनके शब्दो को सुना और उनपर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होने एक-दूसरे से कहा, "बिना किसी प्रकार की शिक्षा के इन्हे इस सब का कैसे ज्ञान है?" ईसा को पता था कि हर कोई उनके शब्दों को सुनकर हैरान है। वह बोले, "मेरे उपदेश मेरे-अपने नही, लेकिन उसके है, जिसने मुझे
१० भेजा है, क्योंकि जो उपदेशों की खुद रचना करता है, वह मनुष्यों से ख्याति चाहता है। जो उसकी इच्छाओ की खोज करता है, जिसने उसे भेजा है, वही सत्य है, और उसमे झूठापन नही होता। मै तो आपको केवल यही उपदेश करता हूँ कि परमात्मा की इच्छा को पूर्ण करो। अगर आप परमात्मा की इच्छा पूरी करेंगे तो आपको मालूम हो जायगा कि जो मै कहता हूँ उसकी मैंने खोज नहीं की, बल्कि ये उपदेश तो परमात्मा के ही है।"

बहुतों ने कहा "लोग कहते है वह झूठा नबी है, लेकिन यहाँ वह सब के सामने खुलेतौर पर बोला है और कोई भी उसके विरुद्ध कुछ भी नही कहता। केवल एक बात है जो हमें उसके मसीहा होने में विश्वास नहीं करने देती, और वह यह है: 'यह लिखा है कि जब मसीहा आयगा तो किसी को भी यह मालूम नही होगा कि वह कहाँ से आया है; लेकिन हम इस आदमी और उसके सारे परिवार को जानते है।'

इसके बाद ईसा ने उनसे कहा, "आप मुझे जानते है। और यह भी जानते है कि कहाँ से मै इस शरीर में आया हूँ, लेकिन आप यह नही जानते कि आत्म-शक्ति में मै कहाँ से आया हूँ। आप यह भी नही जानते कि किसके द्वारा मैं आत्म-शक्ति मे आया हूँ, यद्यपि केवल वही परम-पिता है, जिसे जानने की आपको जरूरत है। अगर आपको बताया जाता कि मै मसीहा हूँ तो आपको मुझ मनुष्य मे विश्वास होता, लेकिन आपको परम-पिता में विश्वास नही, जोकि मुझमे और आपमें है। आपको केवल परम-पिता में ही विश्वास करना चाहिए।"

: ३१ :

सत्योपदेश से प्रकाश

बहुत से लोगो ने, यह सब देखकर और उनकी बातें सुन कर, कहा, "वह दरअसल ही नबी है।" दूसरों ने कहा, "यही मसीहा है।" लेकिन कुछ ने कहा, "क्या मसीहा गैलिली में जन्म ले सकता है? धर्मग्रंथों मे कहा गया है कि मसीहा बैथलेहम में, जहाँ दाऊद ने जन्म लिया था, दाऊद के बीज से

जन्म लेगा।"

ईसा के बारे मे विवाद उत्पन्न हो गया और लोगो में हलचल पैदा हो गई।

इसके बाद राज-पुरोहितो ने ईसा को पकड़ने के लिए आदमियों को भेजा; लेकिन वे ऐसा करने का इरादा न कर सके। जब वे राज-पुरोहितों और फ़रीसियों के पास वापस आये तो उन्होने उनसे पूछा, "तुम उसे लाये क्यों नही ?" उन्होने उत्तर दिया : "इस आदमी के समान कभी किसी ने बातें नही की।"

फ़रीसियो ने उनसे कहा, "क्या तुम भी भटक गए हो ? शासकों और फरीसियों में से भी कोई क्या उसपर विश्वास करता है ? केवल शाप पाये हुए ही उसपर विश्वास करते हैं। वे कानून को नही जानते।"

वे सब अपने घर को लौट आये।

लेकिन ईसा जैतून के पहाड़ पर गये और अपने शिष्यों के साथ वहां उन्होने रात बिताई। सबेरे वह फिर गिर्जे में आये। बहुत-से लोग उनकी बातें सुनने आये। उन्होने उन्हे फिर यह शिक्षा दी, "मेरे उपदेश संसार को प्रकाश देते हैं। जो उनपर अमल करता है वह अन्धेरे मे नही रहेगा, बल्कि वह साथ-साथ यह भी देखेगा कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। मै हर आदमी को वही शिक्षा देता हूँ कि जो परम-पिता परमात्मा देते हैं, जिन्होने मुझे भेजा है।"

उन्होने उनसे पूछा, "तुम्हारे परम-पिता कहाँ हैं ?"

उन्होने उत्तर दिया, "अगर आप मुझे जानते हैं तो आप मेरे परम-पिता को भी जान जायंगे।"

उन्होने उनसे पूछा, "तुम कौन हो ?"

उन्होंने कहा, "मै वह शक्ति हूँ, जिसका न तो आदि था और न अन्त होगा। मै मानव-पुत्र हूँ, लेकिन परमात्मा की शक्ति को ही मेरा पिता मंजूर करो। जब आप लोग अपने-आप में मानव-पुत्र को जागृत कर लेंगे तब आप जान जायगे कि मै कौन हूँ और समझ लेगे कि मै खुद-ब-खुद न कुछ करता हूँ और न कहता हूँ। मै केवल वही करता और कहता हूँ, जो परम-पिता ने मुझे सिखाया है।"

: ३२ :

अमर जीवन

यहूदियों ने ईसा को घेर लिया और कहा, "ये सब जो तुम कहते हो समझना मुश्किल है और हमारे धर्म-ग्रंथों के साथ भी मेल नहीं खाता। हमें सताओ नही, साफ-साफ बत-लाओ, "क्या तुम वही मसीहा हो, जिसे हमारे धर्मग्रंथों के अनुसार संसार मे आना है?"

ईसा ने उन्हें उत्तर दिया, "मै पहले ही तुम्हें बता चुका हूँ कि मै कौन हूँ, लेकिन तुम विश्वास नही करते। जो मै कहता हूँ, उसपर अमल करो और तब तुम्हे मालूम हो जायगा कि मै कौन हूँ और मैं क्यों आया हूँ। वह, जो मेरा अनुसरण करता है और जो मै कहता हूँ उसपर अमल करता है—वह, जो मेरे उपदेशों को समझ लेता है और उन्हें पूरा करता है—मेरे और परम-पिता के साथ है। मै और परम-पिता एक है।"

यहूदी इन शब्दों को सुनकर चिढ़ गए और उन्होने उन्हे मार डालने के लिए पत्थर उठा लिये।

इसपर ईसा ने उनसे कहा, "आप लोग मुझे क्यों मार डालना चाहते हैं ?"

उन्होंने जवाब दिया, "इसलिए कि तुम, जो एक मनुष्य हो, अपने-आपको परमात्मा बताते हो।"

ईसा ने जवाब दिया, "मैंने कहा था कि मै परमात्मा का पुत्र हूं, और जब मै परम-पिता की इच्छा का पालन करता हूँ तो मै उसके साथ एकाकार हूँ। वह, जो अपने-आपको परमात्मा का पुत्र मानता है, दास नही रह जाता, और अजर-अमर जीवन प्राप्त कर लेता है। एक दास अपने मालिक के घर मे हमेशा नही रहता, लेकिन मालिक के पुत्र सदा वहाँ रहते हैं। एक मनुष्य, जिसमे परमात्मा की शक्ति का वास है, परम-पिता मे मिल जाता है और अमरत्व प्राप्त कर लेता है। मै आप लोगों को सचाई से कहता हूं कि जो मेरे शब्दों पर अमल करता है, वह कभी मरेगा नही।"

इसपर यहूदियो ने उनसे कहा, "अब हमे मालूम हो गया है कि तुम्हारे अदर शैतान रहता है। अब्राहीम मर गया और सब नबी मर गए, इतने पर भी तुम कहते हो कि जो तुम्हारे शब्दो पर अमल करेगा वह कभी मरेगा नही। क्या तुम हमारे परम-पिता अब्राहीम से भी बड़े हो ?"

ईसा ने कहा, "मै आपको सचाई से कहता हूँ कि अब्राहीम हुआ उससे भी पहले से मै हूँ।"

ईसा परमात्मा की उस शक्ति के बारे मे कह रहे थे, जो उनमे थी, हर आदमी मे वास करती है और जिसका न आदि है और न अन्त, लेकिन वे उसे समझे नहीं।

यहूदी यह नही समझ सके कि उनका क्या किया जाय।

इससे उनको सजा भी नहीं दिला सकते थे। तब ईसा जॉर्डन नदी के उस पार चले गये और वहाँ रहने लगे।

: ३२ :

सेवा करो

एक बार, जब ईसा यरूसलम से लौट रहे थे, उनके शिष्यों मे से दो, जेम्स और युहन्ना, उनके पास आये और बोले, "मालिक, हमें वचन दो कि जो हम कहेगे वही आप करेंगे।"

ईसा ने कहा, "तुम क्या चाहते हो ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "आप ही के समान हमारा दर्जा हो जाय।"

ईसा ने कहा, "तुम लोग खुद नही जानते कि तुम क्या कह रहे हो। हर कोई अपने निजी यत्नों से 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश कर सकता है, लेकिन कोई भी दूसरे के लिए यह नही कर सकता।"

तब ईसा ने अन्य शिष्यों को अपने पास बुलाया और कहा, "सांसारिक मनुष्य सोचते है कि कौन उनमे ऊँचा और कौन नीचा है ; लेकिन तुम लोगों को किसी को भी ऊँचा या नीचा नही समझना चाहिए। तुममे से जो अव्वल बनना चाहता है उसे अपने-आपको अंतिम मानना चाहिए ; क्योकि यह परम-पिता की इच्छा है कि 'मानव-पुत्र' का जीवन सेवा कराने के लिए नही, बल्कि हरेक की सेवा करने के लिए होना चाहिए और उसे अपने शारीरिक जीवन का शक्ति के जीवन के लिए उत्सर्ग करना चाहिए।"

: ३४ :

सबको समान मिलेगा

इस विषय मे ईसा ने उन्हे एक मिसाल दी। कहा :

"एक दिन एक मालिक बहुत सवेरे अपने अगूर के बगीचे के लिए किराये पर मज़दूरों को लेने गया। एक शिलिंग प्रति-दिन मज़दूरी तय करके उसने उन्हे बगीचे मे भेज दिया। इसके बाद नाश्ते के समय वह फिर बाहर गया और उसने कुछ और आदमी देखे, जिन्हे काम नही मिला था। उनसे वह बोला, 'तुम लोग भी मेरे बगीचे मे जा सकते हो। जो ठीक होगा, तुम्हे दे दूंगा।' वे सब बगीचे मे चले गए। उसने यही फिर दोपहर के खाने के समय, और दोपहर बाद भी किया। जब शाम हो चुकी तो उसने फिर बिना काम के आदमियो को देखा। उनसे उसने कहा, 'तुम लोग बिना काम के यहाँ दिन भर क्यों खड़े रहते हो ?' उन्होने कहा, 'हमें किसी ने काम पर नही बुलाया। मालिक बोला, 'तुम भी मेरे बगीचे मे चले जाओ और जो ठीक होगा तुमको दे दिया जायगा।'

"जब मजदूरी देने का समय आया तो बगीचे के मालिक ने अपने मुनीम से कहा, 'सब मजदूरो को बुलाओ और आखिर से शुरू करके पहले तक सबको समान मजूरी दे दो।' जो लोग शाम को आये थे उन्हें भी एक-एक शिलिंग मिल गया।

"जिन लोगो को पहले काम पर लगाया गया था उन्होने सोचा था कि उन्हे ज्यादा मज़दूरी मिलेगी, लेकिन उन्हे भी एक-ही-एक शिलिंग मिला। इसके बाद जो पहले आये थे, वे बगीचे के मालिक पर यह कहते हुए बिगड़ने लगे, 'इन आदमियो ने केवल घटे भर काम किया है, लेकिन हम लोगों

ने सुबह से लेकर सारा दिन काम किया, और आपने उन्हें भी हमारे ही बराबर बना दिया।'

"मालिक ने उनसे कहा, 'तुमको झीकना नही चाहिए। क्या तुमने एक शिलिंग पर काम करना मंजूर नहीं किया था? जो तुम्हारा वाजिब है, वह ले लो और जाओ। अगर मैं पहले के समान ही आखिरी को भी देना चाहता हूँ तो क्या मै अपनी निजी इच्छा से वैसा कर नहीं सकता? मेरी दयालुता तुमको बुरी लगी है और तुम अपने भाइयों के साथ ईर्ष्या रखते हो। यह ठीक नही है।'

"यही हालत सब मनुष्यों की है। परमात्मा का इच्छित कार्य भले ही कोई जल्दी करे या देर मे, मिलेगा सबको समान ही। जो पहले को मिलेगा वही आखिरी को भी।"

: ३५ :

पुनर्जीवन

ईसा ने एक और मिसाल देकर इसे स्पष्ट किया। उन्होने कहा :

"एक आदमी के दो पुत्र थे। छोटा अपने पिता से अलग हो जाना चाहता था। वह बोला, 'पिताजी, मुझे जायदाद का मेरा हिस्सा दे दो।' उसके पिता ने वैसा ही किया। इसके बाद छोटे बेटे ने अपना हिस्सा लिया और विदेश चला गया। वहाँ उसने अपना सब-कुछ बर्बाद कर दिया और एकदम गरीब हो गया। वह इतना नीचे गिरा कि उसे सूअरो की देख-भाल करनी पड़ी। उसके पास सूअरों को दिये जानेवाले जैतून के फलों के सिवा कुछ भी खाने को नही

था। उसने अपनी जिन्दगी पर विचार किया और मन-ही-मन सोचा, 'अपने पिता को छोड़ना मेरी भूल थी। मेरे पिता के घर मे हर चीज की बहुतायत थी, यहाँ तक कि उनके मजदूरो के खाने को भी काफी होता है, जबकि मै यहाँ सूअरों का खाना खाता हूँ। बेहतर यही है कि मै अपने पिता के पास चला जाऊँ, उनके चरणों में नत-मस्तक होऊँ और कहूँ—पिताजी, मैंने आपके साथ बड़ा भारी गुनाह किया है, मै आपका पुत्र कहलाने योग्य नही हूँ। मुझे एक मजदूर की तरह अपने यहाँ रख लो।'

"यह विचारकर, वह अपने पिता के पास वापस गया। जब वह मकान के पास आया तो उसके पिता ने उसे देखा उससे मिलने के लिए बाहर गया और उसे अपनी छाती से लगाकर प्यार किया।

"पुत्र बोला, 'पिताजी, मैंने आपके साथ बड़ा अन्याय किया है। मै आपका पुत्र होने लायक नही हूँ।' पिता ने इन शब्दो का उत्तर न दिया, लेकिन उसने अपने नौकरों को बढ़िया कपड़े और जूते लाने की आज्ञा दी, और अपने पुत्र से उन्हे पहनने को कहा। उसने एक नौकर को मोटा-ताजा बछड़ा मारने की भी आज्ञा दी। जब सब कुछ तैयार हो गया तो पिता ने अपने घर के सब लोगों से कहा, 'मेरा यह पुत्र मर गया था, और अब पुन. जी गया है, वह खो गया था, अब मिल गया है। इस खुशी के उपलक्ष में हम यह भोज करते हैं।'

"जब सब खाने की मेज पर बैठ गए तो बड़ा बेटा खेतो पर से वापस आया। देखता क्या है कि घर मे दावत हो रही

है। एक मजदूर को बुलाकर उसने पूछा, 'हमारे यहाँ दावत क्यों हो रही है?' मजदूर ने उत्तर दिया, 'क्या आपने सुना नहीं कि आपका भाई लौट आया है और आपके पिता खुशी मना रहे है।'

"बड़े भाई को यह बुरा लगा। वह मकान में दाखिल नही हुआ। लेकिन उसका पिता उसके पास बाहर आया और उसे बुलाया। इसपर भी बड़ा बेटा भीतर नही आया। उसने अपने पिता से कहा, 'कई बरसों तक मैने आपके लिए काम किया और कभी आपकी आज्ञाओं का उल्लंघन नही किया। इतने पर भी आपने मेरे लिए तो मोटा-ताजा बछड़ा कभी नही मारा। लेकिन मेरा छोटा भाई घर छोड़ गया और उसने अपनी सारी सम्पत्ति पियक्कड़ों के साथ नष्ट कर दी, तब भी आप उसके लिए इतनी बड़ी दावत कर रहे है।'

"यह सुनकर पिता ने बड़े पुत्र को जवाब दिया, 'तुम हमेशा मेरे साथ रहे हो और जो मेरा है वह सब तुम्हारा है। लेकिन तुम्हे दुखी नही होना चाहिए, बल्कि खुश होना चाहिए कि तुम्हारा जो भाई मर चुका था, अब वह फिर जिन्दा हो गया है, खो जाने के बाद अब वह फिर मिल गया है।'

"परमात्मा इसी तरह सबका स्वागत करते है, जब वे परमात्मा के पास—जल्दी या देर मे—वापस लौटते है और 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करते है।"

: ३६ :

अन्तर्दृष्टि

एक दिन ईसा ने अपने शिष्यों से कहा, "मुझे बताओ कि लोग मेरे उपदेशों को कैसा समझते है।" उन्होंने जवाब

दिया, "कुछ का विचार है कि जॉन ने जो शिक्षा दी थी, वही आप देते है। दूसरे कहते हैं कि जो इसाइया ने सिखाया था वही आप सिखाते है। कुछ कहते है कि आपके उपदेश जरमिया जैसे है और आप नबी है।"

ईसा ने कहा, "ठीक, लेकिन तुम लोग मेरे उपदेशों को कैसा समझते हो ?"

साइमन पतरस बोला, "मेरे विचार मे आप यह शिक्षा देते है कि प्रत्येक मनुष्य मे परमात्मा की शक्ति विद्यमान है और इसलिए हर आदमी परमात्मा का पुत्र है।" ईसा ने उसे कहा, "साइमन, तुम खुशकिस्मत हो कि तुमने यह समझा। कोई भी आदमी तुम्हे यह नही दिखा सकता था; लेकिन तुमने जान लिया क्योंकि परमात्मा तुममे विद्यमान है। वह मै नही हूं जिसने अपने शब्दों से तुम्हे यह दिखाया है, बल्कि परमात्मा ने अपने-आप ऐसा किया है।"

इस बार ईसा ने अपने शिष्यों को बताया कि यरुसलम मे वह उन लोगों के हमलों और अपमानों से नहीं बच सके, जो उनके उपदेशों मे विश्वास नही करते। लेकिन अगर वे उन्हे मार भी डालते तो वे केवल उनके शरीर को ही मार डालते, परमात्मा की उस शक्ति को नही, जो उनमे वास करती है।

इन शब्दो को सुनकर पतरस को बहुत दु:ख हुआ। उसने ईसा का हाथ पकड लिया और बोला, "अब से आप यरुसलम मे न जाना।"

ईसा ने जवाब दिया, "ऐसा न कहो। अगर तुम मेरी तकलीफो और मृत्यु से डरते हो तो जान पड़ता है कि तुम दैवी इच्छा क्या है, इसे नही, बल्कि केवल मानवी इच्छा को

ही समझते हो। 'प्रभु-राज्य' के लिए जो लोग इस तरह का जीवन बिताते हैं उन्हे तकलीफें होंगी, क्योंकि संसार अपने निज को प्यार करता है और जो दैवी है उससे नफरत करता है। संसार के मनुष्यों ने हमेशा उन लोगों को दुखी किया है, जिन्होंने परमात्मा की इच्छा को पूरा किया।"

इसपर लोगों तथा अपने शिष्यों को बुलाकर ईसा ने कहा, "जो मेरे उपदेशों के अनुसार जीना चाहता है उसे अपने शारीरिक जीवन को त्याग देना चाहिए और तकलीफे सहने को तैयार हो जाना चाहिए, क्योंकि जो अपने शारीरिक जीवन के लिए भयभीत है वह अपना सच्चा जीवन खो देता है, लेकिन जो अपना शारीरिक जीवन उत्सर्ग कर देगा, वह अपने सच्चे जीवन को बचा लेगा। जो मेरे उपदेशों को पूरा करना चाहता है, उसे शब्दों में नही, बल्कि अमल में उन्हें पूरा करना होगा।"

इसके बाद उन्होंने यह मिसाल दी :

"एक आदमी के दो बेटे थे। पहले से उसने कहा, 'जाओ, मेरे बाग में काम करो।' पुत्र ने कहा, 'मै नही जाऊंगा!' लेकिन बाद में वह पछताया और चला गया। पिता फिर दूसरे पुत्र के पास गया और उससे भी वही कहा। दूसरे बेटे ने जवाब दिया, 'मैं अभी जाता हूं।' पर वह गया नही। दोनों में किसने अपने पिता की इच्छा को पूरा किया?"

शिष्यों ने कहा, "पहले ने।"

ईसा ने कहा, "और मै आपको बताऊं कि जो लोग चर्चा करते है, लेकिन अमल नही करते, कलाल और व्यभिचारी उनसे पहले 'स्वर्ग के राज्य' में प्रवेश करेंगे।"

: ६७ :

फल की आशा न करो

अनन्तर शिष्यो ने ईसा से कहा, "आपकी शिक्षा काफी मुश्किल है। हमारे इस विश्वास में वृद्धि कीजिए कि अगर हम आपकी शिक्षा के अनुसार जीवन वसर करते हैं तो हमारा जीवन सुखी होगा।"

वह समझ गये कि वे यह जानना चाहते है कि नेक जीवन विताने के वदले उन्हे क्या पुरस्कार मिलेगा।

ईसा ने उनसे कहा :

"पुरस्कारों मे विश्वास करने से धारणा नही वनती। यह तो जीवन के विषय में स्पष्ट जानकारी का प्रश्न है। अगर आप स्पष्टतया समझते है कि आपका जीवन परमात्मा की शक्ति मे है, तो आप किसी भी पुरस्कार की आशा नही करेंगे। कोई मालिक अपने नौकर के कर्तव्य-पालन पर उसे धन्यवाद नही देता। और एक नौकर, अगर वह समझता है कि वह एक नौकर है तो इससे परेशान नही होता, वल्कि अपना काम करता है और जानता है कि जो उसका वाजिव है, वह उसे मिलेगा ही। इसी तरह तुमको भी परमात्मा की इच्छा पूरी करनी चाहिए और समझना चाहिए कि तुम नौकर हो और कर्तव्य-पालन के वदले पुरस्कार की आशा नही करनी चाहिए, वल्कि जो मिले उसीमे संतोष करना चाहिए। हमे पुरस्कार पाने के लिए उत्सुक नही रहना चाहिए। हमे इस वात के लिए उत्सुक रहना चाहिए कि हम इस जीवन को, जो हमें परमात्मा की इच्छा पूर्ण करने योग्य बनाता है, नष्ट न करे। इसलिए उन नौकरों के समान सदा तैयार रहो, जो अपने

मालिक को आशाभरी नजर से देखते है। नौकरों को यह पता नही होता कि मालिक जल्दी या देर मे लौटेगा, बल्कि उन्हे तो सदा ही तत्पर रहना होता है।

"और यही हालत इस जीवन की है। हमेशा और प्रति क्षण, हर किसी को परमात्मा की इच्छा पूरी करनी चाहिए, किसी को भी अपने-आपसे यह नही कहना चाहिए, 'मै अमुक काम तव या वहाँ कर लूंगा।'

"इसलिए हमेशा उस शक्ति में और वर्तमान में ही वास करो। जीवन-शक्ति के लिए समय जैसी कोई वस्तु नही है। सदा सावधान रहो कि तुम चिंताओं के बोझ के नीचे न दब जाओ। अत्यधिक खान-पान या चिंताओं में न पड़ो और परमात्मा की शक्ति को ही सदा अपने पर शासन करने दो।"

: ३८ :

जीवन का लक्ष्य

इसके बाद ईसा ने उन्हे एक और मिसाल यह जताने के लिए दी कि लोगों को जीवन कैसे बिताना चाहिए। उन्होंने कहा :

"एक मालिक ने एक बाग लगाया, उसने उसे खोदा और सवारा। उसने बाग को यथासभव अधिक-से-अधिक फल-प्राप्ति के योग्य बनाने के लिए सब-कुछ किया। फिर उसने मजदूरों को वाग में काम करने के लिए भेजा कि वे फल जमा करें और समझौते के अनुसार भुगतान करें। जब समय आया तो मालिक ने वसूली के लिए एक नौकर को भेजा; लेकिन मजदूर यह भूल गए थे कि वाग को उन्होने नही लगाया और

संवारा भी उन्होने नही । वे तब आये थे जब बाग तैयार था। सो उन्होने मालिक के आदमी को खाली हाथ लौटा दिया और उस बाग मे ऐसे रहने लगे, जैसे वे ही मालिक है। उन्होंने यह नही सोचा कि बाग उनका नहीं और वे मालिक की इजाजत से ही उसमे रहते है। इसपर मालिक ने मजदूरो को यह याद कराने के लिए अपने कारिन्दे को भेजा कि भुगतान का समय हो चुका है; लेकिन उन्होंने उसे भी भगा दिया। इसके बाद उसने अपने बेटे को भेजा। मजदूरो ने सोचा कि अगर वे बेटे को मार डालते है तो वे खुद-ब-खुद मालिक बन जायगे। यह सोचकर उन्होने उसे मार डाला।

"तब मालिक क्या करता ? वह केवल उन मजदूरों को हटाकर उनकी जगह दूसरों को भेज सकता था।

"परमात्मा यह मालिक है, यह ससार बाग है, मनुष्य मजदूर है; आत्मिक जीवन भुगतान है; धर्मात्मा मनुष्य मालिक के दूत है, जो लोगो को याद कराते है कि उन्हे अपने शरीर के लिए नही, बल्कि आत्मा के लिए जीना चाहिए।

"जो लोग भटक गए है वे कल्पना करते है कि शारीरिक कल्याण के लिए ही उन्हे जीवन दिया गया है, परमात्मा की इच्छा-पूर्ति के लिए नही, और वे अपनी आत्म-शक्ति को मार डालते है और इस तरह अपने असली जीवन को खो देते हैं।"

: ३९ :

शिक्षक न बनो

इसके बाद ईसा फिर यरुसलम मे आये और फरीसियो के बुरे जीवन के विषय मे लोगो के सामने गिर्जे में बोले :

"स्क्रीबियों के उपदेशों से सावधान रहो, जो अपने को सच्चे धर्म का शिक्षक कहते है। उनसे सावधान रहो, क्योंकि उन्होने असली शिक्षकों—नबियों की जगह ले ली है। उन्होंने स्वतः ही मनुष्यों को प्रभु-इच्छा की शिक्षा देने का अधिकार ले लिया है। वे बाते बनाते हैं, लेकिन जो शिक्षा वे देते है उस-पर अमल नही करते। वे शिक्षक बनना चाहते है और इसलिए दिखावा करने की कोशिश करते है। वे पहरावा बदल लेते हैं, अपने-आपको उपाधियाँ दे लेते हैं; लेकिन लाभ-कारी काम कोई नही करते। उनपर विश्वास मत करो। याद रखो कि किसी को भी खुद को 'शिक्षक' नहीं कहना चाहिए। ये बने हुए, सचाई के ठेकेदार शिक्षक समझते है कि मनुष्यों को रीति-रिवाजों और प्रतिज्ञाओं के सहारे परमात्मा तक पहुँचाया जा सकता है। वे यह नहीं देखते कि बाहरी बातों के तो कोई मानी ही नही, लेकिन जो सबसे ज्यादा महत्त्व-पूर्ण है, वह मनुष्य की आत्मा है। जो बाहरी और सहज है उसे वे पूरा करते है; लेकिन जो दर-असल आवश्यक और कठिन है, (प्रेम, दया, और सच) उसे वे बिलकुल छोड़ देते है। वे बाहरी नियमों को स्थिर रखने की ही चिन्ता करते हैं और बाहरी साधनों द्वारा उसे दूसरों से स्वीकार कराते है। फलतः वे मुर्दों के उस पुते हुए बक्से के समान हैं, जो बाहर से तो साफ है, लेकिन भीतर से घिनौना।

"बाहर से वे संतों और शहीदों का मान करते हैं; लेकिन दर-असल ये ही वे लोग हैं, जिन्होंने संतों को दुखी किया और मारा। जो भी अच्छाई है, उसके वे दुश्मन थे और हैं। संसार में सारी बुराई उन्ही से आती है, क्योकि जो अच्छाई है उसे

वे छिपाते हैं और बुराई को अच्छाई बताते हैं। यही बात है, जिससे हमें सबसे ज्यादा डरना चाहिए, क्योंकि, तुम स्वयं जानते हो कि कोई भी गलती ठीक की जा सकती है; लेकिन जबतक मनुष्य अच्छाई क्या है, इस विषय मे भूल करते रहते हैं, वे अपनी भूलो को ठीक नहीं कर सकते। बिल्कुल यही हालत है इन बने-हुए पादरियो की।"

इसके बाद ईसा ने कहा, "मै यहाँ यरुसलम में सब मनुष्यों का एका करना चाहता था, जिससे वे एक-दूसरे के साथ प्रेम करते हुए और एक-दूसरे की सेवा करते हुए जीवन बिताएँ, लेकिन ये लोग तो उन लोगो को मार डालना चाहते हैं, जो इस बात की शिक्षा देते हैं कि अच्छाई क्या है।"

इतना कहकर वह गिर्जाघर से चले गये।

ईसा ने कहा, "मै तुम्हे सच कहता हूँ कि यह गिर्जा अपनी सारी सजावट के साथ गिरकर नष्ट हो जायगा और इसका नामोनिशां भी नही रहेगा। लेकिन प्रभु का एकमन्दिर (गिर्जा) है—और वह उन लोगो के दिल मे है, जो एक-दूसरे से प्रेम करते है।"

तब लोगों ने उनसे पूछा, "वह मन्दिर बनेगा कब?" ईसा ने जवाब दिया, "अभी तो नही। चिरकाल तक लोग दूसरो को धोखा देने के लिए मेरे उपदेशों का उपयोग करेंगे और इससे युद्ध और अशांति होगी। सभी जगह बहुत ज्यादा अशांति होगी और प्रेम कम।

"लेकिन जब हर कोई सत्य-उपदेशों को समझ लेगा तो बुराई और प्रलोभनों का अंत हो जायगा।"

: ४० :

सच्चा निर्भयी है

स्क्रीवियों और फरीसियों ने ईसा को नष्ट करने के लिए जितनी भी कोशिशे हो सकती थी, की। वे एक सभा में जमा हुए और उनका अंत कैसे लाया जाय, इसपर विचार शुरू हुआ। उन्होंने कहा, "इस आदमी को रोकना ही होगा। वह अपने उपदेशों को इतने प्रेरणात्मक ढंग से कहता है कि अगर उसे बढ़ने दिया गया तो हर कोई उसीपर विश्वास करेगा और हमारे धर्म को त्याग देगा। आधे लोग उसपर विश्वास भी करने लगे है और अगर हर कोई उसके इस उपदेश पर विश्वास कर लेगा कि सब मनुष्य भाई-भाई है और एक परमात्मा के पुत्र है और हमारे यहूदी लोग अन्य जातियों से अलग नही है, तो सभी चढ़ आयेंगे और हमें जीत लेगे और फिर यहूदी राज्य का अस्तित्व नहीं रहेगा।"

'स्क्रीवियों और फरीसियों ने बहुत देर तक इस प्रश्न पर विचार किया। वे ईसा से पिंड छुड़ाने के लिए उन्हे मार डालना चाहते थे, लेकिन लोगों से उन्हें डर लगता था और वैसा करने की हिम्मत नहीं करते थे।

इसपर उनके लाट पादरी ने, जिसका नाम काइयाफस था, कहा, "आपको इतना डरने की आवश्यकता नहीं। समूचे समुदाय की रक्षा के लिए कभी-कभी एक मनुष्य को मार भी डालना पड़ता है। अगर हम इस आदमी का अत नही करते तो सारी जाति नष्ट हो जायगी, अथवा अगर वह नष्ट नही होती तो वह बिखर जायगी और हमारे एकमात्र सच्चे धर्म को त्याग देगी। इसलिए हमे ईसा को मार डालने में संकोच

नही करना चाहिए ।"

जब काइयाफस ने यह कहा, सब उसके साथ सहमत हो गए और उन्होने ईसा को मार डालने का फैसला किया । अगर ईसा यरुसलम मे होते तो वे उन्हें तत्काल पकड़ लेते और मार डालते, लेकिन उन दिनों वे कहाँ है, इसका उन्हें पता न था।

लेकिन जब पासओवर[1] के भोज का दिन नजदीक था तो लाट पादरी ने सोचा कि ईसा निश्चय ही दूसरे लोगों के साथ भोज मे आयेंगे । उन्होने अपने नौकरों से कह दिया कि यदि कोई ईसा को देखे तो वह उन्हे उसके पास ले आवे ।

और सचमुच ही, पासओवर से छ दिन पहले ईसा ने अपने शिष्यो से कहा, "चलो, अब हम यरुसलम चले।" लेकिन शिष्यो को मालूम था कि लाट पादरी ईसा को मार डालना चाहते है, तो उन्होने ईसा से यरुसलम न जाने की प्रार्थना की । उन्होने कहा, "लाट पादरियों ने आपको पत्थरों से मार डालने का फैसला किया है । अगर आप वहाँ जायेंगे तो निश्चय ही वे आपको मार डालेंगे ।"

ईसा ने जवाब दिया, "केवल वही, जो अंधेरे में चलता है, लड़खड़ाता और गिरता है, लेकिन जो सूर्य के प्रकाश मे चलता है, वह लड़खड़ाता नही । वह मनुष्य गलती नही कर सकता जो परमात्मा की इच्छा के प्रकाश मे वास करता है और जो प्रभु की इच्छानुसार आचरण करता है । ऐसा आदमी डर नही सकता । आओ, यरुसलम चले ।"

वे तैयार हो गए और वहाँ गये ।

---

१. यहूदियो का एक त्योहार ।

: ४१ :

षड्यंत्र

जब लोगों ने यरुसलम में सुना कि ईसा आ रहे हैं तो वे उनसे आगे बढ़कर मिलने गये, उन्हें घेर लिया, उन्हें गधे पर बैठाया, उनके आगे-आगे दौड़ने लगे और पेड़ों से टहनियाँ तोड़ कर सड़क पर बिछा दी। उन्होंने नारे लगाये, "यह है हमारा सच्चा बादशाह ! इन्होंने हमें सच्चे प्रभु के विषय में बताया है।" इस तरह ईसा गधे पर सवार होकर यरुसलम में गये। लोगों ने पूछा कि वह कौन है ? तो जो उन्हें जानते थे उन्होंने कहा, "यह ईसा है, यह नबी है, जो गैलिली में नाजरथ से प्रकट हुए हैं।"

जब वह गिर्जाघर के पास पहुँचे तो गधे से उतरे। वह गिर्जे में दाखिल हुए और लोगों को उपदेश देने लगे। फरीसियों और पादरियों ने उन्हें देखा, एक-दूसरे से बोले, "देखो, यह आदमी कर क्या रहा है। सब लोग उसीके पीछे चले जा रहे हैं।"

वे उसे फौरन पकड़ लेना चाहते थे, लेकिन हिम्मत नही थी, क्योंकि वे लोगों से डरते थे। तब उन्होंने योजना बनाई कि लोगों को उत्तेजित किये बिना यह कैसे किया जाय।

इधर ईसा लोगों को बिल्कुल स्थिर-भाव से शिक्षा देते रहे। यहूदियों के अलावा गिर्जे में प्राचीन यूनानी भी थे। यूनानियों ने सुना था कि ईसा के उपदेश केवल यहूदियों के लिए ही नही, बल्कि सब मनुष्यों के लिए है। वे उनके उपदेश सुनना चाहते थे। उन्होंने यह बात फिलिप को बताई और फिलिप ने एंड्रयू को।

ईसा और यूनानियों का मेल कराने से ईसा के शिष्य डरते थे। उन्हें डर था कि यहूदियों और दूसरी जातियों में भेद न करने से लोग ईसा के साथ नाराज होंगे। पहले तो वे उन्हें यह बताने का इरादा न कर सके कि यूनानी क्या चाहते हैं; लेकिन आखिर उन्होंने ईसा को यह बता दिया।

यह सुनकर कि यूनानी उनके शिष्य बनना चाहते हैं, ईसा पहले तो भौंचक्के रह गए। वह जानते थे कि उन्होंने यहूदियों और प्राचीन यूनानियों के बीच भेद नहीं रखा, इससे यहूदी उनसे नाराज होंगे। लेकिन जल्दी ही वह संभले और बोले, "यहूदियों और यूनानियों में कोई अन्तर नहीं, सब मनुष्यों में वही 'परम-पुरुष' है। यद्यपि मैं उसके लिए मरना चाहता हूँ, फिर भी उस 'परम-पुरुष' यानी सब मनुष्यों में एक प्रभु-शक्ति को स्वीकार करने का समय आ गया है। गेहूँ का एक दाना केवल तभी फलता है जब उसका निजी अस्तित्व नहीं रहता। मनुष्य केवल तभी पूर्ण होता है जब वह प्रभु-इच्छा की पूर्ति के लिए अपना जीवन दे देता है। जो अपने शारीरिक जीवन से प्यार करता है वह अपने आध्यात्मिक जीवन को नष्ट कर लेता है; लेकिन जो अपने शारीरिक जीवन का परित्याग करने को तैयार है वह आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करता है।

"मेरी आत्मा में इस समय यह संघर्ष है: क्या मुझे अपने अस्थायी जीवन के प्रलोभन में फँसना है, या परम-पिता की इच्छा को पूरा करना है? अब वह समय आ गया है जबकि मुझे वही करना चाहिए, जिसके लिए मुझे संसार में भेजा गया था। क्या मैं यह कह सकता हूँ, "हे परम-पिता, मुझे जो करना चाहिए, उससे मुझे मुक्त कर दे?" मैं ऐसा कदापि नहीं

कह सकता। मुझे केवल यही याचना करनी है, "हे परम-पिता! अपने अंतस् में मै आपका अनुभव करूँ, मै 'परम-पुरुष' को प्रकाशित करूँ और सब मनुष्यों को परस्पर मिला दूं।"

यहूदियों ने इसका उत्तर दिया, "हमें मालूम है कि ईसा अवश्य आयगा, लेकिन 'परम-पुरुष' को प्रकाशित करने के तुम्हारे आशय को हम नही समझ सके।"

ईसा ने इसका उत्तर दिया : "परम-पुरुष को प्रकाशित करने का अर्थ है आध्यात्मिक प्रकाश में रहना। हम सबके अन्दर आध्यात्मिक प्रकाश मौजूद है। संपूर्ण अंतरिक्ष मे व्याप्त 'परम-पुरुष' को प्रकाशित करने का मतलब इस बात में विश्वास करना है कि हर मनुष्य में प्रभु-शक्ति विद्यमान है। जो मेरे उपदेशों में विश्वास करता है, वह मुझमें नही, बल्कि प्रभु-शक्ति में विश्वास करता है, और प्रभु-शक्ति संसार को जीवन प्रदान करती है। आपमें से हरेक में वह मौजूद है। जो मेरे उपदेशों को समझता है वह उस शक्ति को जानता है, क्योंकि वह शक्ति उसमें वास करती है और संसार को जीवन प्रदान करती है। अगर कोई मेरी बातों को सुनता है और उन्हें समझता नहीं है तो मै उसे दोष नही देता, क्योंकि मैं दोष देने नहीं, बल्कि रक्षा करने आया हूँ। जो मेरे शब्दों को समझता नहीं, वह प्रभु-शक्ति में विश्वास नही करता, क्योकि मैं जो कहता हूँ वह अपनी ओर से नहीं, बल्कि परम-पिता की शक्ति से कहता हूँ। परमात्मा की वही शक्ति मेरे अन्दर है। जो मैं कहता हूं, वह उस शक्ति ने ही मुझे बताया है।"

इतना कहकर, ईसा चले गये और लाट पादरी की आँखों से ओझल हो गये।

: ४२ :

विश्वासघात

जिन्होने इन प्रवचनों को सुना उनमें से अनेक अमीर और शक्तिशाली व्यक्ति ईसा के उपदेशों पर विश्वास करते थे, लेकिन वे फरीसियों के सामने इसे स्वीकार करने से डरते थे, क्योंकि एक भी फरीसी उन उपदेशों को नही मानता था। वे इन उपदेशो की सचाई को स्वीकार नही करते थे, क्योंकि वे मानवी उपदेशो मे विश्वास करने के आदी हो गए थे और परमात्मा के आदेशों को नही मानते थे।

उसके बाद लाट पादरियों और स्क्रीबियों ने काइयाफस के दरबार मे सभा की और इस बात पर विचार किया कि ईसा को मार डालने के लिए उसे चोरी से कैसे पकड़ा जा सकता है ? वे उसे खुले आम पकड़ने से डरते थे। ईसा के सबसे पहले शिष्यो मे से एक, यहूदा इस्कूती, उनकी सभा मे आया और बोला, "अगर लोगो के सामने आप ईसा को पकडने से डरते है तो मै ऐसा मौका देखूंगा जब बहुत थोड़े लोग उनके साथ हो। मै आपको बतला दूंगा कि वह कहाँ है और तब आप उन्हे पकड़ सकते है। आप लोग इसके बदले मे मुझे क्या देंगे ?" इसपर उन्होने उसे चांदी के तीस टुकड़े देने का वचन दिया। यहूदा सहमत हो गया और तब से लेकर वह ईसा को लाट पादरियो के हवाले करने के मौके की तलाश मे रहने लगा।

इसी बीच ईसा फिर यरुसलम से चले गये और अपने शिष्यो के साथ एकात मे रहने लगे। जब बिना खमीर की रोटी के भोज का पहला दिन आया तो शिष्यों ने उनसे पूछा,

"हम पासओवर का भोज कहाँ करेंगे ?" ईसा ने कहा, "किसी एक गाँव में जाओ और जो पहला मकान पड़े उसीमें प्रवेश करो और कहो कि पासओवर के भोज की तैयारी के लिए हमारे पास समय नहीं है; लेकिन हमें यहाँ भोज कर लेने की स्वीकृति चाहिए।"

शिष्यों ने उनके कहे अनुसार किया और वे एक गाँव में गये। वहाँ सबसे पहले पड़नेवाले मकान में वे गये और मकान के मालिक ने उन्हें भीतर आने की स्वीकृति दे दी।

जब वे सब आ गये—ईसा और उनके बारह शिष्य, जिनमें यहूदा इस्कूती भी था—तो वे पासओवर के भोज के लिए एक मेज पर बैठ गए। ईसा ने भांप लिया कि यहूदा ने मार डालने के लिए उन्हे फरीसियों के हवाले करने का वचन दिया है; लेकिन वह यहूदा के साथ बुराई के एवज में बुराई नहीं करना चाहते थे और सब शिष्यों के सामने उसपर दोष भी नही लगाना चाहते थे। जिस प्रकार वह हमेशा अपने शिष्यों को प्रेम करने की शिक्षा देते थे, उसी तरह अब भी वह प्रेम से यहूदा के दिल को कोमल बनाना चाहते थे।

जब वह और उनके बारहों शिष्य मेज पर बैठे थे, ईसा ने थोड़ी-सी रोटी ली। उसके बारह टुकड़े किये और उनमें से हरेक को यह कहते हुए एक-एक टुकड़ा दिया, "यह मेरा जिस्म है, इसे लो, और खाओ।" इसके बाद उन्होंने एक प्याले में शराब उंडेली और उसे शिष्यों के हवाले किया, और कहा, "इस प्याले में से तुम सब पियो। यह मेरा खून है।"

इस तरह जब एक-एक करके उन्होंने प्याले में से शराब पी

की तो उसके बाद ईसा ने कहा, "हां, यह मेरा खून है, जिसे मैं दुनिया के गुनाहों के लिए बहा रहा हूँ।" इतना कह चुकने के बाद ईसा मेज पर से उठे, उन्होने अपना चोगा उतार दिया, उन्होंने कमर मे अंगोछा बांधा, पानी का एक लोटा लिया, और बोले, "अब मैं सब शिष्यो के पाँव धोऊँगा।" पहले वह पतरस के पास आये, लेकिन पतरस वहाँ से यह कहता हुआ हट गया कि क्या एक गुरु शिष्यो के पांव धो सकता है? ईसा ने कहा, "आप लोगों को यह विचित्र लगता है कि मैं आपके पाँव धोना चाहता हूँ, लेकिन जल्दी ही आप जान लेंगे कि मैं यह क्यों करता हूँ। मैं यह इसलिए करता हूँ कि यद्यपि आप लोग पवित्र है, तथापि आपमे हर कोई पवित्र नही है।"

ईसा ने जब यह कहा तो वह यहूदा के बारे मे सोच रहे थे।

तब ईसा ने यहूदा सहित सब शिष्यो के पांव धोये। इसके बाद अपना चोगा पहनकर वह अपने सब शिष्यो को उपदेश देते हुए बोले :

"क्या आपको मालूम हुआ कि मैंने यह क्यो किया? मैंने यह इसलिए किया है कि आपको भी हमेशा एक-दूसरे के साथ यही करना होगा। मैं, जो आप सबका गुरु हूँ, आप लोगो को यह सिखाने के लिए करता हूँ कि जो आपको तकलीफ दे उसके साथ आप कैसा वर्ताव करे। अगर आप यह जान लेंगे और इसीके अनुसार अमल करेंगे तो इससे हमेशा आपका कल्याण ही होगा।"

इतना कहकर, ईसा उदास हो गए और आगे बोले, "हाँ—हाँ, जिन सबके मैंने पांव धोये हैं, उनमे से एक मुझे धोखा देगा।"

शिष्यों ने एक-दूसरे की ओर देखा। उन्हें पता नही था कि वह किसके बारे मे कह रहे हैं। एक शिष्य ईसा के करीब ही बैठा था। साइमन पतरस ने उसे इशारा किया कि वह ईसा से पूछे कि वह किसके बारे में ऐसा कह रहे है। उसने पूछा। ईसा ने कहा, "जिसे मैं रोटी का टुकड़ा दूंगा, वही वह शिष्य है।" उन्होंने यहूदा इस्क्रूती को रोटी का एक टुकड़ा दिया, और कहा, "जो कुछ तुम करना चाहते हो, उसे जल्दी से करलो !" पहले तो कोई भी न समझा कि ईसा के कहने का मतलब क्या है; लेकिन यहूदा समझ गया। जैसे ही उसने रोटी का टुकड़ा लिया वह उठा और बाहर निकल गया। जबतक और शिष्य समझें कि यह क्या हो रहा है तबतक उसे पकड़ने की कोशिश करने में काफी देर हो चुकी थी, क्योंकि रात अंधेरी थी।

जब यहूदा चला गया, ईसा ने कहा, "बच्चो, मैं बहुत दिन तक तुम लोगों के साथ नही रहूँगा। मेरे उपदेशों के बारे मे तर्क न करना, लेकिन, जैसाकि मैंने फरीसियों से कहा था, 'जो मैं कहता हूँ' वही करो। मैं तुम्हे एक नया आदेश देता हूँ: जैसे मैंने तुम सबसे अखीर तक प्यार किया है, इसी तरह तुम भी, अखीर तक एक-दूसरे के साथ, और सब मनुष्यों से प्रेम करो। इस एक आदेश में मेरे सारे उपदेश समा जाते हैं। केवल इसी एक आदेश का पालन करने से तुम मेरे सच्चे शिष्य बन सकते हो। एक-दूसरे से प्रेम करो और सब मनुष्यो से प्रेम करो।"

: ४३ :

परमात्मा के साथ एकाकार

उन्होंने अपने शिष्यों से आगे कहा, "प्रभु की पूर्णता के अधिकाधिक निकट आना ही जीवन है। वही एक मार्ग है। मैं इसका अनुसरण करता हूँ और आप इस मार्ग को जानते हैं।"

इसपर टॉमस ने उनसे कहा, "नही, हम नही जानते कि आप कहाँ जा रहे है और इसलिए हम उस मार्ग को नही जान सकते।"

ईसा ने जवाब दिया, "मै परम-पिता के पास जा रहा हूँ, और मेरे उपदेश उस तक पहुँचने का मार्ग है। मेरे उपदेशो की राह के सिवा कोई भी अपने जीवन को परम-पिता के साथ एकाकार नही कर सकता। प्रेम के बारे में मेरे उपदेशों को पूर्ण करो और आपको परम-पिता का ज्ञान हो जायगा।"

फिलिप ने कहा, "हमे परम-पिता के दर्शन कराइए।"

ईसा ने जवाब दिया, "यह कैसी बात है कि आप परम-पिता को नही जानते ! मेरा उपदेश है कि मै परम-पिता मे हूँ और परम-पिता मुझमे है। जो मेरे उपदेशों के अनुसार आचरण करता है और मेरे आदेशों को पूर्ण करता है वह परम-पिता को जान लेगा। मै मर जाऊँगा और सांसारिक मनुष्य मुझे नही देखेंगे, लेकिन मेरी आत्म-शक्ति नही मरेगी और आप उससे जीवन प्राप्त करेंगे। तभी समझ सकेंगे कि मै परम-पिता मे हूँ और परम-पिता मुझमें है।"

इसपर यहूदा (इस्करूती नहीं बल्कि अन्य) ने पूछा, "क्या आपकी आत्म-शक्ति सब मनुष्यो मे नही और केवल हममे ही प्रवेश करेगी ?"

ईसा ने जवाब में कहा, "जो मेरे उपदेशों को पूरा करता है, उसे परम-पिता प्रेम करते है और मेरी आत्म-शक्ति उसमें वास करती है। लेकिन परम-पिता उसे प्रेम नहीं करते, जो मेरे उपदेशो को पूरा नही करता और मेरी आत्म-शक्ति भी उस मनुष्य मे वास नही करती। मेरे उपदेश मेरे निजी नही है, बल्कि परम-पिता के है।

"बस इतना ही इस समय मै आपको बता सकता हूँ। लेकिन मेरी आत्म-शक्ति यानी सत्य की शक्ति बाद में आप लोगों में जगेगी और तब मैने जो आपको बताया है उसकी याद आयगी और वह अधिकांश समझ में आ जायगा। जब आप इसे समझ लेंगे तो आप शान्ति अनुभव करेंगे—ऐसी शांति नही, जैसी सांसारिक लोगों को प्राप्त होती है; ब्लकि ऐसी शांति कि आप किसी से भी नही डरेंगे।

"आप इस बात से दुखी क्यों है कि मै आप सबको छोड़ रहा हूँ? मै परम-पिता के पास जा रहा हूँ और उससे आप लोगों के पास सत्य की शक्ति के रूप में लौटकर आऊँगा, आप लोगों के दिलों में प्रवेश करूँगा। आपको मेरी मृत्यु पर दुखी नही, वल्कि खुश होना चाहिए; क्योकि मेरी जगह—मेरे शरीर की जगह—आप लोग अपने दिलों में मेरी आत्म-शक्ति को पा जायेंगे और वह आप लोगों के लिए सुखकर है।"

: ४४ :

प्रेम ही परमात्मा है

"अगर मेरे प्रेम के नियम से आप लोगों का पथ-निर्देश होगा और आप उस कानून का पालन करेंगे तो आपको आपकी

इच्छानुसार सब-कुछ प्राप्त होगा; क्योंकि यह परम-पिता की इच्छा है कि जिसकी तुम चाह करो, तुम्हे प्राप्त हो। चूंकि परम-पिता परमात्मा ने, जो अच्छा है, वही मुझे दिया है, इसलिए जो अच्छा है वह मैं आपको देता हूँ। जैसे मैं परम-पिता का आदेश पूरा करता हूँ, उसी तरह अगर आप मेरा आदेश पूरा करेंगे तो आप धन्य हो जायेंगे। मेरा आदेश है कि जैसे मैं आपसे प्रेम करता हूँ आप भी एक-दूसरे से प्रेम करें, अर्थात् आप प्रेम के लिए अपना शारीरिक जीवन उत्सर्ग कर देने को तैयार रहे। मैंने जो आपको सिखाया है अगर आप उसके अनुसार आचरण करते है तो आप भी मेरे ही समान हैं। मैं आपको दास नही समझता, वल्कि अपने समान ही समझता हूँ, क्योंकि जो मैंने परमात्मा से समझा था वह सब आपको बता दिया है, और जो मै करता हूँ उसे आप भी कर सकते हैं। मैंने आपको केवल सच्चा उपदेश दिया है और केवल वही उपदेश सच्चा कल्याण प्रदान करता है।

"एक-दूसरे से प्रेम करना ही संपूर्ण उपदेश है। अगर दुनिया आपसे नफरत करती है और आपको दंड देती है तो आश्चर्य न करो, क्योंकि मेरे उपदेश संसार के लिए घृणा-पूर्ण है। अगर आप दुनिया का साथ देते है तो वह आपसे प्रेम करेगी। लेकिन मैंने आपको दुनिया से अलग कर दिया है और इसलिए वह आपसे घृणा करेगी और आपको सज़ा देगी। अगर वे मुझे दड देते हैं तो वे आपको भी दंड देंगे। वे ऐसा करने के लिए लाचार है, क्योंकि वे परमात्मा को नही जानते। मैंने उन्हे बताया है कि उनका परमात्मा कौन है, लेकिन वे मेरी बात नहीं सुनते। उन्होंने मेरे उपदेश को समझा नहीं।

मैंने परमात्मा के बारे मे उन्हे जो बताया था, वे उसे समझे-नहीं। इस कारण उन्होंने मुझसे और भी ज्यादा नफरत की।

"मै आपको इससे कही अधिक कहूँगा, लेकिन इस समय आपके लिए उसे समझना कठिन होगा। जब सत्य की शक्ति प्रवेश पा जायगी तो वह आपको संपूर्ण सत्य प्रकट कर देगी, क्योकि वह आपको कोई नई या अपना निजी कुछ नही बतायगी, बल्कि वह तो आपको प्रभु का आदेश ही बतायगी और आपके जीवन की सभी घटनाओ में आपको मार्ग दिखायगी। आपके अन्दर की यह शक्ति आपको वही बतायगी, जो मै आपको बताता हूँ।"

: ४५ :

सत्य-जीवन

इसके बाद ईसा ने अपनी दृष्टि जन्नत की ओर उठाई, और बोले, "मेरे परम-पिता, आपने अपने पुत्र को जीवन की स्वतन्त्रता प्रदान की है, जिससे वह सत्य-जीवन को प्राप्त कर सके। सत्य-प्रभु को जान लेना ही सत्य-जीवन है और मैंने मनुष्यों को आपका दर्शन कराया है। आपने मुझे जो करने की आज्ञा दी थी मैंने वह किया है। वे पहले भी आपके थे, लेकिन आपके आदेशानुसार मैंने उन्हे सत्य प्रकट किया है कि आप उनके अन्दर है और उन्होने आपको पहचान लिया है। वे समझ गए है कि जो कुछ मुझमे है वह उनके भी अन्दर है, और वह सब आप ही से आता है। वे समझ गए है कि यह सब जो मेरा है वह आपका है, और यह सब जो आपका है वह मेरा है। अब मैं संसार का नही रहा, बल्कि

मैं आपके पास आ रहा हूं; लेकिन वे तो ससार मे रहेगे और इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, हे पिता, उन्हे सत्य-पथ में बनाए रहना। मैं यह प्रार्थना नही करता कि आप उन्हे ससार से उठा ले, लेकिन यह प्रार्थना करता हूं कि आप उन्हें उनके असत्य के लिए क्षमा करें, वे सब एक होकर रहे—जैसे आप मुझमे है और मैं आपमें हूं, और साथ ही यह भी कि वे हममे भी रहे। सब-के-सब मिलकर एक हो और सब यह समझे कि वे अपनी निजी इच्छा से नही जन्मे, बल्कि आपने, उन्हे प्रेम करते हुए, इस संसार मे भेजा है, जैसेकि आपने मुझे भेजा था।

"हे सत्य-पिता, यह संसार अभी आपको नही जानता, लेकिन मैं आपको जानता हूं। वे मेरे द्वारा आपको जानना सीख गए है। मैंने उन्हें समझा दिया है कि आपने उन्हे प्रेम करते हुए जीवन प्रदान किया है और आपका यह प्रेम उनसे आपको ही लौटना चाहिए।"

: ४६ :

अहंकार मत करो

इसके बाद ईसा उठे और अपने शिष्यो के साथ जैतून के पहाड़ पर गये। रास्ते मे वह उनसे बोले, "हां, जैसा कि धर्म-ग्रथ मे कहा है, वह समय आ गया है जब चरवाहा मार डाला जायगा और भेड़े बिखर जायगी। यही दशा आपकी होगी। मैं पकड़ लिया जाऊंगा और आप लोग भाग जाओगे।"

पतरस ने कहा, "नही, मैं नही भागूंगा. हालांकि और सब

भाग जायेंगे, लेकिन में आपको कदापि नही छोड़ूंगा । आपके साथ तो में कहीं भी जाने को तैयार हूं : जेल या मृत्यु तक के लिए भी !"

लेकिन ईसा ने कहा, "जो आपको करना हो, करोगे । उसके बारे में पहले से शेखी न बघारो । संभव है, आज रात को, मुर्गे के बांग देने से पहले ही, आप एक बार नही, बल्कि तीन बार मेरा साथ छोड़ दे ।"

"मै ऐसा कभी नहीं करूंगा," पतरस ने कहा और दूसरे शिष्यों ने भी यही कहा ।'

जब वे गेट्समेन के बाग में पहुंचे तो ईसा ने उनसे कहा, "थोड़ी देर यहां विश्राम कर लो । मै प्रार्थना करना चाहता हूं ।" वह पतरस और ज़बेदी के दो बेटों को साथ ले गये, और उनसे बोले, "मै दुखी हूं । मेरे साथ रहो ।"

फिर वह उनसे कुछ परे चले गये और भूमि पर लेट गये और प्रार्थना करने लगे, यह कहते हुए, "मेरे परम-पिता, जो मेरे साथ होनेवाला है उससे मुझे मुक्त कर !" इसके बाद वह थोड़ी देर तक चुप रहे फिर आगे बोले, "लेकिन इसके साथ ही मेरी नहीं बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो, और वह मेरी नही, बल्कि आपकी इच्छा के अनुसार ही ।"

इसके बाद वह उठे और अपने शिष्यों के पास गये, लेकिन वे सब गहरी नीद में सोये पड़े थे । ईसा ने उन्हे जगाया और कहा, "अपनी आत्मा में साहस उत्पन्न करो । केवल आत्म-शक्ति ही बलवान है, यह मांस का पुतला तो दुर्बल है ।"

ईसा फिर वहां से चले गये और उन्होंने पुनः प्रार्थना शुरू की, कहा, "हे मेरे परम-पिता ! आपकी इच्छा पूर्ण हो,

मेरे अनुसार नहीं बल्कि आपकी इच्छानुसार।"

यह कहकर वह अपने शिष्यों के पास लौट आये और देखा कि वे फिर से सो गए है। वह तीसरी बार उनके पास से चले गये और फिर बोले, "हे मेरे परम-पिता, मेरी नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूर्ण हो!"

इसके बाद वह शिष्यो के पास लौट आये और उनसे बोले, "अब आओ चलें, मैं अपनेको सांसारिकता के हाथो मे उत्सर्ग करने जा रहा हूँ।"

: ४७ :

गिरफ्तारी

जैसे ही उन्होंने यह कहा यहूदा इस्करी वहां आ पहुँचा। उसके साथ लाट पादरियों के हथियार-बंद फौजी तथा रोशनी लिये नौकर थे। यहूदा एकाएक ईसा के पास गया और उसने उन्हे नमस्कार किया और उन्हे चूमा।

ईसा ने उससे पूछा, "मित्र, तुम क्यों आये हो?"

तुरत ही सिपाहियों ने ईसा को घेर लिया और उन्हें पकड़ लेना चाहा। लेकिन पतरस ने लाट पादरी के एक नौकर से तलवार छीन ली और उसका दाहिना कान काट दिया। यह देखकर ईसा ने पतरस से कहा, "तलवार को पुन. उसकी म्यान मे रख दो। जो लोग तलवार उठाते हैं, वे तलवार से मारे जायगे।"

उसके बाद ईसा उन लोगो की ओर मुखातिब हुए जो उन्हें पकड़ने आये थे, और बोले, "तुम लोग एक डाकू को पकड़ने की तरह मुझे हथियारो के साथ क्यो पकड़ने आये हो?

क्या मै हर रोज आप लोगों को उपदेश देता हुआ गिर्जा में आपके बीच नही होता—तब आपने मुझे क्यों नही पकड़ा ?"

इसपर अफसर ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि ईसा को बाँध लो और सिपाहियों ने उन्हे बाँध लिया। पहले वे उन्हें काइयाफस के पास ले गये। यह काइयाफस वही था, जिसने ईसा को मार डालने के लिए यह कहकर फरीसियों को प्रेरित किया था कि सारी जाति के मर जाने से तो एक आदमी का मरना कही बेहतर है। इस तरह ईसा को एक मकान के सहन में लाया गया।

ईसा के सारे शिष्य भाग गये। उनमें से केवल एक—पतरस—दूर-दूर रहता हुआ ईसा के पीछे चला और देखता रहा कि वे उन्हे कहाँ ले जाते है।

जब ईसा को लाट पादरी के सहन में लाया गया, तो पतरस भी यह देखने के लिए दाखिल हुआ कि क्या होता है। एक औरत ने उसे सहन मे देखा और पूछा, "क्या तुम भी गैलिली के ईसा के साथ थे ?" तब पतरस डरा कि कही वह भी ईसा के साथ गुनहगार न हो जाय और उत्तर दिया, "मैं नही जानता कि तुम किस बारे मे बात कर रही हो।"

इसके बाद ईसा को मकान के अन्दर ले जाया गया तो पतरस भी बाकी लोगो के साथ ड्योढ़ी में दाखिल हुआ। वहाँ आग जल रही थी और एक दूसरी औरत आग ताप रही थी। जब पतरस उस आग के पास आया तो इस औरत ने उसकी ओर देखा और कहा, "मै समझती हूँ कि यह आदमी नाजरथ में ईसा के साथ था।" पतरस इससे बहुत डर गया और कसमें खाने लगा कि वह ईसा के साथ कभी नहीं रहा और उसके

बारे मे कुछ नही जानता।

थोड़ी देर बाद कुछ दूसरे और लोग पतरस के पास गये और बोले, "तुम सब एक ही हो, तुम भी तो दंगाइयों में से एक हो। तुम्हारी बोली से लगता है कि तुम गैलिली के रहने वाले हो।" इसपर पतरस ने फिर कसम खाई कि उसने तो ईसा को कभी देखा तक नही। बड़ी मुश्किल से अभी वह यह कह ही पाया था कि मुर्गे ने बांग दी और पतरस को ईसा के ये शब्द याद हो आए, 'आज रात ही मुर्गे के बांग देने से पहले तुम हो सकता है एक बार नही, तीन बार मुझे छोड़ दो।' वह सहन से बाहर चला गया और फूट-फूटकर रोने लगा।

: ४६ :

यातना

बडे-बूढ़े और स्क्रीबी लाट पादरी के मकान पर जमा हुए और जब वे सब आ गये तो ईसा को भीतर लाया गया और लाट पादरी ने पूछा कि वह क्या शिक्षा देता था और उसके शिष्य कौन थे ?

ईसा ने जवाब दिया, "मै हमेशा हर किसी के सामने खुले आम बोला हूँ और मैंने कभी किसी बात को नही छिपाया। आप मुझसे क्यो पूछते हैं ? उन लोगों से पूछिए जिन्होने मेरे उपदेशो को सुना और समझा है। वे ही आपको बतायगे।"

जब ईसा ने यह कहा तो लाट पादरी के नौकरों मे ने एक ने उनके मुंह पर चाटा मारा और कहा, "जानते हो तुम किससे बात कर रहे हो ? क्या कोई लाट पादरी को ऐसे

जवाब देता है ?"

ईसा ने कहा, "अगर मैंने बुरी तरह जवाब दिया है तो मुझे बताओ कि उसमें गलत क्या था ? लेकिन अगर मैंने बुरे तरीके से जवाब नही दिया तो तुम मुझे मारते क्यों हो ?"

लाट पादरी और बड़े-बूढ़ों ने ईसा को सज़ा देने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कोई सबूत न मिला। आखिर उन्होंने दो झूठे गवाह तैयार किये और इन गवाहों ने कहा कि ईसा ने ऐलान किया था कि वह गिर्जाघर को नष्ट कर सकता है और उसे तीन दिन में बना भी सकता है। लाट पादरी ने ईसा से पूछा, "इसके बारे में तुम्हें क्या कहना है ?" लेकिन ईसा ने जवाब नहीं दिया। इसके बाद लाट पादरी ने उनसे कहा, "तो हमें बताओ, क्या तुम ईसा, प्रभु के पुत्र हो ?" ईसा ने जवाब दिया, "हाँ।"

इसपर लाट पादरी चिल्लाया, "तुम प्रभु के निंदक हो ! हमें और सबूत क्या चाहिए ? आप सबने सुना है कि यह किस प्रकार प्रभु को निंदा करता है ?" लाट पादरी ने सभा में उपस्थित लोगों से कहा : "अब तो आप लोगों ने खुद ही सुन लिया कि यह किस प्रकार प्रभु की निंदा करता है ! इसके लिए आप इसे क्या सज़ा देना चाहते हैं ?"

इस पर उन सबने जवाब दिया, "मौत !"

इसके बाद सब लोग और संतरी ईसा पर झपटे और सबने उनके मुंह पर थूकना शुरू कर दिया और उनके चांटे लगाने लगे। उन्होंने उनकी आँखों पर पट्टी बांध दी, उन्हें पीटा और पूछा, "तुम तो प्रभु के पुत्र हो; अब तनिक अंदाज करो कि किसने तुम्हें पीटा है ?" लेकिन ईसा मौन रहे।

: ४१ :

निर्भयता

इसके बाद ईसा को बांधकर रोमन गवर्नर, पॉंटियस पाइलट के पास ले जाया गया। जब उन्हे पाइलट के सामने उन्होंने हाजिर किया तो पाइलट बाहर निकल कर ड्योढ़ी में आया। जो लोग ईसा को लाये थे उनसे उसने पूछा, "तुम इस आदमी पर क्या दोष लगाते हो ?" उन्होंने जवाब दिया, "यह पापी है। इसीलिए हमने इसे आपके सामने हाज़िर किया है।"

पाइलट ने जवाब दिया, "अगर तुम इसे पापी मानते हो तो तुम लोग खुद ही अपने नियमों द्वारा इसका न्याय करो।" लेकिन वे बोले, "हम इसे इसलिए लाये हैं कि आप इसे मृत्यु-दड दे, क्योंकि हमे किसी को मार डालने की इजाजत नहीं है।"

तब पाइलट ने उनसे फिर पूछा कि ईसा का अपराध क्या है ? वे बोले, "वह लोगो को भड़काता है और उन्हे सीज़र को कर अदा करने के लिए मना करता है और अपने-आपको यहूदियो का बादशाह कहता है।"

पाइलट ने उनकी बात सुनी और ईसा को अदालत में पेश करने की आज्ञा दी।

जब ईसा उसके सामने आये, पाइलट ने पूछा :

"क्या तुम यहूदियो के बादशाह हो ?" ईसा ने जवाब दिया, "क्या आप यह अपनी ओर से मुझसे पूछ रहे हैं, या आप उन्ही के शब्दो को दोहरा रहे है ?"

पाइलट ने जवाब दिया, "मैं यहूदी नही हूँ। तुम्हारे ही लोग तुम्हे मेरे सामने लाये हैं, क्योंकि तुम अपने-आपको

बादशाह कहते हो।"

ईसा ने कहा, "हाँ, मै बादशाह हूँ, पर मेरा पृथ्वी पर का साम्राज्य नही है। अगर में भौतिक वस्तुओं का बादशाह होता तो मेरी प्रजा मेरी ओर से लड़ती और मुझे वह यहूदियों के हाथों में न सौंपती। लेकिन आप देखते है, जो उन्होंने मेरे साथ किया है! मेरा पृथ्वी पर का राज नही है।"

तब पाइलट ने पूछा, "क्या तुम अब भी अपने को बादशाह मानते हो ?"

ईसा ने कहा, "मै लोगों को स्वर्ग के साम्राज्य के बारे मे सचाई की शिक्षा देता हूँ और जो सचाई के साथ जीवन बिताता है वह बादशाह है।"

पाइलट ने कहा, "सचाई ? सचाई क्या है ?"

पाइलट ने ईसा की ओर पीठ की और वह बाहर यहूदियों के पास गया और उनसे बोला, "मै नही समझता कि इस आदमी ने कोई बुराई की है, न ऐसी कोई बात है, जिसके लिए इसे मृत्यु-दंड दिया जाय।"

लेकिन लाट पादरियों ने यह कहते हुए अनुरोध किया कि इसने बहुत बुराई की है, लोगों को भड़काया है और सारे जूडिया को विद्रोही कर दिया है।

इसके बाद पाइलट ने लाट पादरियों की मौजूदगी मे ईसा से फिर सवाल किया और उसने उनसे पूछा, "तुम देखते हो कि वे तुमको किस प्रकार अपराधी बतलाते है ? तुम अपनी सफाई क्यों नहीं देते ?" लेकिन ईसा मौन रहे और एक भी शब्द न बोले। इससे पाइलट को बहुत ही आश्चर्य हुआ।

तब पाइलट को याद आया कि गैलिली तो बादशाह हैरोद

के राज्य मे है। उसने पूछा, "वह गैलिली का रहनेवाला तो नही ?" उन्होने जवाब दिया कि वह वही का वासी है। इसपर पाइलट ने कहा, "अगर वह गैलिली का वासी है तो वह हैरोद के अधिकार मे है।" और यहूदियो से पिंड छुड़ाने के लिए पाइलट ने यहूदियों को हैरोद के पास भेज दिया।

: ५० :

संकोच

तब ईसा को हैरोद के पास ले जाया गया। हैरोद ने ईसा के बारे मे बहुत-कुछ सुन रखा था और उन्हे देखकर वह बहुत खुशहुआ। उसने ईसा को अपने सामने बुलाया और उनसे कई बातो के बारे मे पूछना शुरू किया। लेकिन ईसा ने जवाब नही दिया। लाट पादरियो और स्क्रीबियो ने पाइलट के सामने पेश करने की तरह ही हैरोद के सामने भी ईसा पर अनेक दोष लगाये और कहा कि यह विद्रोही है। लेकिन हैरोद ने ईसा को महज एक बेवकूफ आदमी समझा और उसके सिर पर एक लाल फीता बांधने की आज्ञा दी ताकि वह बेहूदा-सा दिखाई देने लगे और उसने बेवकूफी की इस पोशाक में उसे पाइलट के पास लौटा दिया।

जब वह पाइलट के सामने दूसरी बार लाया गया तो पाइलट ने यहूदियो के शासकों को फिर बुलाया और उनसे कहा, "आप इस आदमी को मेरे सामने इसलिए लाये थे कि वह लोगो को विद्रोह के लिए उकसाता है। मैंने आपके सामने ही इसकी जांच की थी और जान नही सका कि वह विद्रोही है। मैंने उसे आपके साथ हैरोद के पास भेजा था,

और जैसाकि आप देखते हैं, वहाँ भी इसके खिलाफ कोई खतरनाक बात मालूम नही हो पाई। इसलिए मैं समझता हूँ कि इसे फांसी नही दी जायगी, लेकिन इसके कोड़े लगाये जायँगे और उसके बाद छोड़ दिया जायगा।

जब उन्होंने यह सुना तो वे सब चिल्ला उठे, "नही-नहीं, इसे रोमन तरीके से मौत की सजा दी जाय....इसे टिकटी पर कीलों से लटकाया जाय।"

पाइलट ने उनकी बात सुनी और बोला, "अच्छी बात है। लेकिन यह एक पुरानी रीति है कि पासओवर के अवसर पर एक अपराधी को क्षमा-दान किया जाय। एक डाकू, बाराबास है, जिसे मृत्यु-दंड दिया गया है और दूसरा यह आदमी है। दो मे से एक को मुक्त किया जा सकता है। इनमें से कौन छोड़ा जाय—ईसा या बाराबास।"

पाइलट ईसा को बचाना चाहता था; लेकिन लाट पादरियों ने लोगो को प्रेरणा की और वे सब चिल्लाये, "बाराबास! बाराबास!"

लेकिन पाइलट अब भी ईसा को मृत्यु-दंड नही देना चाहता था और उसने लाट पादरियों को पुनः प्रेरणा की कि वह उसे मुक्त कर दे। वह बोला, "आप सब लोग उसके खिलाफ क्यों अड़ गए है? उसने कोई बुरा काम नही किया और उसे फांसी देने का कोई कारण भी नजर नही आता।"

लेकिन लाट पादरी और उनके नौकर फिर चिल्लाये, "उसे फांसी दो! उसे रोमन तरीके से फांसी दो! उसे फांसी दो! उसे फांसी दो!"

पाइलट ने कहा, "तब इसे ले जाओ और अपने-आप

उसे फांसी दो, क्योंकि मुझे तो उसमे कोई दोष दीखता नही।"

लाट पादरियों ने कहा, "कानून के अनुसार ही हम मांग करते हैं। अपने को 'प्रभु का पुत्र' कहने के लिए कानून के अनुसार उसे फांसी दी जानी चाहिए।"

इसपर पाइलट असमजस में पड़ गया, क्योंकि वह नही जानता था कि 'प्रभु का पुत्र' का मतलव क्या है!

वह लौटकर अदालत मे चला गया और उसने फिर ईसा को वुलाया और उनसे पूछा, "तुम कौन हो, और कहाँ से आये हो?" लेकिन ईसा ने जवाव नही दिया। पाइलट ने कहा, "तुम मेरी वात का जवाव क्यों नहीं देते? क्या तुम जानते हो कि तुम मेरे अधिकार मे हो और मैं तुम्हें फांसी भी दे सकता हूँ और मुक्त भी कर सकता हूँ?"

इसके वाद ईसा ने जवाव दिया, "नहीं, आपका मुझपर कोई अधिकार नही। अधिकार तो केवल परमात्मा का है।"

: ५१ :

फांसी की आज्ञा

पाइलट चाहता था कि ईसा को छोड़ दिया जाय और उसने फिर लोगों से वातचीत की; उसने कहा, "यह कैसी वात है कि आप लोग अपने 'वादशाह' को फांसी देना चाहते है?"

लेकिन यहूदियो ने जवाव दिया, "अगर आपने ईसा को छोड़ दिया तो आप यह जाहिर कर देंगे कि आप सीज़र के स्वामिभक्त नौकर नहीं हैं, क्योंकि जो अपने-आपको वादशाह वताता है, वह सीज़र का शत्रु है। हमारा एक वादशाह सीज़र है, इसलिए इस 'वादशाह' को फांसी दो।"

जब पाइलट ने ये शब्द सुने तो उसने महसूस किया कि उसे ईसा को फांसी देनी ही चाहिए । वह यहूदियों के पास बाहर आया, अपने हाथों पर उसने पानी डाला, और बोला, "मै इस बेगुनाह आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रंगना चाहता ।"

लोग चिल्लाए, "उसका खून हमारे और हमारे बच्चों के सिर पर रहने दो !"

तब पाइलट ने ईसा को पीटने का हुक्म दिया । जब सिपाही उन्हें पीट चुके तो उन्होंने उनके सिर पर ताज पहना दिया और उनके हाथ में एक लकड़ी थमा दी, उनके कंधों पर एक लाल ओढ़नी डाल दी और उनका मजाक उड़ाने लगे । वे उन्हें झुक-झुक कर सलाम करते और कहते, पर "यहूदियों के बादशाह की जय !" उन्होंने उनके मुंह और सिर प्रहार किये और उनके चेहरे पर थूका । वे सब चिल्लाते जाते थे, "इसे फांसी दो ! हमारा बादशाह सीज़र है ..... इसे फांसी दो !"

अतः पाइलट ने ईसा को फांसी देने का हुक्म दिया । उन्होंने लाल ओढ़नी उतार ली और उनपर उन्हींके वस्त्र ओढ़ा दियें, और उन्हे फांसी के स्थान पर टिकटी ले जाने को कहा, ताकि उन्हे वहाँ फाँसी दी जा सके । इस जगह का नाम गॉलगोथा था ।

उन्होने उन्हें टिकटी पर कीलों से ठोंक दिया । दो दूसरे आदमियों को भी फांसी पर लटकाया गया । ईसा मध्य में थे और उनकी दोनों ओर एक-एक आदमी ।

ईसा ने कहा, "परम-पिता उन्हे माफ करो, क्योंकि वे नहीं

जानते कि वे क्या कर रहे हैं !"

: ५२ :

अन्त

जब ईसा टिकटी पर लटक रहे थे तो लोगों ने उन्हें घेर लिया और गालियाँ दी । कुछ लोग उनके पास तक आये, अपने सिरों को हिलाते हुए कहते, "देखो, तुम यरुसलम के गिर्जे को नष्ट करना चाहते थे और तीन ही दिन में फिर बना लेना चाहते थे । अच्छा ही हुआ न अब ! अपने-आपको बचाओ तो, इस टिकटी से उतरकर तो दिखाओ !"

लाट पादरी और स्क्रीवी वहाँ जमा हुए और उन पर हँसे । बोले, "वह दूसरों को बचाता था, लेकिन अपने-आपको नही बचा सकता ! अब दिखाओ कि तुम ईसा हो । टिकटी से उतर आओ तो हम तुमपर विश्वास कर लेंगे । यह कहता था कि प्रभु का पुत्र है और परमात्मा उसे भूलेंगे नही ····· अब परमात्मा ने उसे क्यों भुला दिया ?"

दूसरे लोगों, लाट पादरियों और सिपाहियों—सबने उन्हें गालियाँ दीं ।

जिन डाकुओं को उनके साथ ही फांसी दी गई थी उनमे से एक बोला, "अगर तुम ईसा हो तो अपने-आपको और हमें भी बचाओ ।" लेकिन दूसरे डाकू ने यह सुनकर कहा, "तुम प्रभु से डरते नही । खुद ही अपने बुरे कामों के लिए टिकटी पर लटके हुए हो । इसपर भी एक बेगुनाह आदमी को गाली देते हो ! तुमको और मुझे तो एक कारण से फांसी पर लटकाया गया है, लेकिन इस आदमी ने तो कुछ भी बुरा नही

न... [illegible] हा, "मेरे प्रभु, हे मेरे स्वामी, तुमने मुझे [illegible] !"

और जब लोगों ने यह सुना, वे हँसे और बोले, "वह एलियास नबी को बुला रहा है। आओ देखें तो कि एलियास आता है या नहीं।"

इसके बाद ईसा बोले, "मुझे पीने को कुछ दो।" और एक आदमी ने एक स्पंज लिया और उसे सिरके में डुबोकर और सरकंडे पर बाँधकर ईसा को दिया। ईसा ने स्पंज को चूस लिया और तब ऊँची आवाज में बोले, "मेरा काम पूरा हुआ। हे परम-पिता! मै अपनी आत्मा को आपके हाथों में सौंपता हूँ।"

इसके बाद उनका सिर ढलक गया और वह चिर-शांत हो गये।